जिहादियों को जन्नत—केवल क़ियामत बाद

— डॉ. के.वी.पालीवाल

विषय-सूची

जिहादियों को जन्नत–केवल क़ियामत बाद–डॉ.के.वी.पालीवाल

सहयोग राशि–रुपये बीस

पैठछ्ज़81.86970.40.1

प्रथम संस्करण–1000 प्रतियाँ
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, 2065, अगस्त 2008

हिन्दू राइटर्स फोरम

129-बी, एम.आई.जी. राजौरी गार्डन
नई दिल्ली-110027

1. यह पुस्तक क्यों ?

प्रारंभ से ही जन्नत इस्लाम का एक मुख्य आकर्षण रहा है जिसको पाने के लिए पिछले कुछ वर्षों से सारे विश्व में आत्मघाती हमलों ने अत्यन्त भयानक और विनाशकारी रूप धारण कर लिया है जिनमें हजारों निरपराध लोगों की हत्याएँ हो चुकी हैं। अकेले भारत में ही जनवरी 2004 से मार्च 2008 तक, ईराक के बाद, सबसे ज्यादा हमले हो चुके हैं जिनमें 3674 व्यक्ति मारे जा चुके हैं। **(पायो. 18.5. 2008)**

इस्लाम के मुल्ला, मौलवी और कट्टरपंथी मुसलमान भोले-भाले गरीब और अनपढ़ युवकों को ही नहीं, बल्कि पढ़े-लिखों, जैसे-इंजीनियर, डॉक्टर आदि को भी गैर-मुसलमानों के विरूद्ध जिहाद करने के लिए यह कहकर लुभाते हैं कि यदि वे अल्लाह के लिए जिहाद करते हुए शहीद भी हो गए तो दयालु अल्लाह उन्हें फौरन जन्नत में दाखिल कर देगा। यहाँ उन्हें न केवल अल्लाह के दर्शन होंगे बल्कि अति सुंदरी अनेकों बड़ी-बड़ी आँखों वाली कुँवारी युवतियों (हूरों) के साथ उनकी शादी करा दी जाएगी और वे उनके साथ जब तक चाहें विषय-भोग के आनंद उठाते रहेंगे। वे वहाँ सदा जवान बने रहेंगे, न कभी बूढ़े होंगे, न बीमार पड़ेंगे। वे जन्नत में रेशमी कपड़ों से सुसज्जित खूबसूरत युवकों द्वारा परोसी गई विभिन्न प्रकार की मदमाती शराब एवं सैंकड़ों प्रकार के अत्यन्त ज़ायकेदार भोजनों-फलों, मेवों आदि का भी आनंद लेते रहेंगे। इतना ही नहीं, दयालु अल्लाह उन्हें वहाँ अनेक हूरों के साथ विषय-भोगों के लिए विशेष काम-शक्ति भी देगा।

इस प्रकार वे न केवल जीवन के सर्वोत्तम उद्देश्य-जन्नत की पूर्ति कर सकेंगे बल्कि शहीद होने पर मरणोत्तर जीवन में भी, सांसारिक लोगों की तरह, यौन सुखों का सदैव आनन्द भी लेते रहेंगे। इतने लुभावने प्रस्तावों को भला कौन पुरूष ठुकरा सकता है ? परिणामस्वरूप इस्लाम के प्रारंभ से ही लेकर आज तक लाखों अबोध युवक इन राजनैतिक महत्त्वाकांक्षियों, कट्टरपंथी इस्लामवादियों और मुल्लाओं की लुभावनी बातों पर अटूट विश्वास कर ('*अल्लाह के नाम जिहाद*' करके) अपना अमूल्य जीवन नष्ट करते चले आ रहे हैं।

अतः हम यहाँ, कुरान और हदीसों के आधार पर, निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार करेंगे–

1. इस्लाम में जन्नत पाने का अधिकारी कौन है ? 2. इसके पाने के तरीके क्या हैं? जन्नत के लिए जिहाद ही क्यों ? 3. क्या फिदायीन हमले जिहाद की मान्यताओं के अनुकूल हैं ? 4. क्या शहीद को विशेषाधिकार प्राप्त हैं ? 5. जन्नत कैसा है ? 6. जन्नत का जीवन कैसा है ? 7. क्या एक शहीद किसी अन्य के लिए जन्नत की सिफ़ारिश कर सकता है ? 8. क्या किसी शहीद को फौरन जन्नत मिल सकती है ? 9. क़ियामत क्या है, और कब आएगी ? 10. क्या इस्लाम के जन्नत संबंधी विवरण बुद्धिसंगत हैं ? 11. जन्नत के प्रलोभनों का मूल उद्देश्य क्या है ?

यहाँ हमारा उद्देश्य इस्लामी जन्नत के खोखले वायदों की सच्चाइयों को उजागर करके उन हज़ारों युवकों को मरने से बचाने का है, जो कि जन्नत में अनेक सुन्दरियों के साथ भोगविलास के प्रलोभनों में फंसकर अपना जीवन नष्ट करते चले आ रहे हैं।

2. जन्नत–जीवन का मूल उद्देश्य

जन्नत अरबी के 'जन्न' शब्द से बना है जिसका अर्थ है, ढ़कना, और वह जगह, जो पौधों और वृक्षों से ढ़की हो बाग कहलाता है। अत: बाग का अर्थ हुआ जन्नत। इस्लाम में बाग, जिसमें घर और आमोद-प्रमोद के साधन मौजूद हों, को जन्नत कहा गया है। यह अल्लाह द्वारा ईमानवालों को उनके नेक कामों के बदले उपहार में देने का प्रतीक है। **(करीम, पृ. 1)**

इस्लाम में जन्नत इतना महत्त्वपूर्ण विषय है कि कुरान के 114 सूराओं में से 74 में, इसका वर्णन किया गया है **(इरफानी, पृ. 350-354)**। अनेक आयतों में जन्नत को बार-बार सांसारिक जीवन से श्रेष्ठतर और इसे पाना जीवन की सफलता बताया गया है।

(प) *"हर जीव को मृत्यु का स्वाद चखना है और तुम्हें तुम्हारा भरपूर बदला 'कियामत' के दिन चुका दिया जाएगा तो, जिसे 'आग' (जहन्नम) से हटा दिया गया और 'जन्नत' में दाखिल कर दिया गया, वह सफल रहा और सांसारिक जीवन तो केवल एक धोखे की सामग्री है।"* **(*3 : 185,* अनु. मुहम्मद फारूकखां और मुहम्मद अहमद)**

(पप) *"आगवाले और बागवाले **(जहन्नम वाले और जन्नत वाले)** कभी समान नहीं हो सकते, जन्नत वाले ही सफल हैं।"* (59 : 20)

2.1 मरणोत्तर जीवन में सैक्स-इस्लाम की विशेषता

यदि विश्वधर्मों की दृष्टि से देखें तो लगभग सभी धर्मों में स्वर्ग-नरक की अवधारणा है। तीनों सेमेटिक मतों–यहूदी, ईसाइयत और इस्लाम में, 'जन्नत' और 'जहन्नम' का वर्णन है। मगर यहूदी और ईसाई मत में मरणोत्तर यौन सुखों की व्यवस्था नहीं है।

केवल इस्लाम ही एक ऐसा मत है जिसमें विभिन्न श्रेणी के जन्नतों का वर्णन है जहाँ कि मरणोत्तर जीवन में भी भरपूर यौन सुखों की व्यवस्था है। हिन्दू धर्म में भी अच्छे और बुरे कर्म करने वालों के लिए कर्मानुसार स्वर्ग और नरक में सुख-दुखों का विधान है परंतु इसमें भी मरणोत्तर यौन सुखों की कोई व्यवस्था नहीं है।

बौद्ध धर्म, क्योंकि मरणोत्तर जीवन को ही नहीं मानता, इसलिए इसमें जन्नत आदि का वर्णन नहीं है। अत: इस्लाम के अलावा किसी भी अन्य धर्म में मरणोत्तर जीवन में भी अनेकों कुँवारी सुंदरियों के साथ विषय-भोगों का प्रावधान नहीं है। मरणोत्तर सैक्स केवल इस्लाम की विशेषता है।

2.2 जन्नत पाने का अधिकारी कौन ?

अब सबसे पहला प्रश्न उठता है कि जन्नत कौन पा सकता है, कौन नहीं ? इसे पाने के कौन-कौन अधिकारी हैं ? कुरान और हदीसों के अनुसार केवल एक मुसलमान को ही जन्नत मिलेगा, गैर-मुसलमान को नहीं। जैसे "*केवल मुसलमान ही जन्नत में प्रवेश करेंगे।*" **(मुस्लिम, खंड 1 : 205 व 209, पृ. 76 व 78)**

कुरान के अनुसार, मुसलमानों में भी केवल तीन प्रकार के लोग ही जन्नत के अधिकारी होंगे। पहला अल्लाह और पैगम्बर मुहम्मद विश्वासी; दूसरा अल्लाह और पैगम्बर का आज्ञाकारी, सत्कर्मी और शरियतानुसार जीवन भोगी; और तीसरा अल्लाह के लिए '*जिहाद*' (युद्ध) करने वाला।

1. अल्लाह और पैगम्बर मुहम्मद विश्वासी को जन्नत

(प) *"जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें हम ऐसे बागों (जन्नत) में दाखिल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे"* **(4 : 57 एवं अन्य 4 : 122 ; 9 : 72 ; 10 : 9 ; 11 : 23 आदि।)**

(पप) *"जो कोई किसी अन्य को अल्लाह का साझी ठहराएगा उस पर तो अल्लाह ने जन्नत हराम (अवैध) कर दिया है और उसका ठिकाना जहन्नम है।"* **(5 : 72)**

(पपप) पैगम्बर ने कहा-*"जो कोई प्रसन्नतापूर्वक अल्लाह को अपना स्वामी, इस्लाम को अपना धर्म और मुहम्मद को अपना पैगम्बर मान लेता है, वह निश्चित रूप से जन्नत में प्रवेश पाने का अधिकारी हो जाता है।"* **(मुस्लिम, खंड 3 : 4645 ; पृ. 1260)**

(पअ) अल्लाह के पैगम्बर ने कहा-*"जो कोई इस विश्वास के साथ मर गया कि अल्लाह के अलावा अन्य कोई पूज्य देवता नहीं है, उसे जन्नत मिलेगा।"* **(मुस्लिम, खंड 1 : 39 ; पृ. 23-24)**

(अ) पैगम्बर ने कहा-*"जिब्रेल मेरे पास आया और यह सुसमाचार दिया कि तुम्हारे उम्माह में से जो कोई किसी अन्य को अल्लाह के साथ जोड़े बिना मर गया, उसे जन्नत मिलेगा" उस पर अबू धर (प्रश्नकर्त्ता) ने कहा-"क्या तब भी जब उसने चोरी और परस्त्रीगमन किया हो।" उन्होंने (पवित्र पैगम्बर ने) उत्तर दिया, "(हाँ) भले ही उसने चोरी और परस्त्रीगमन किया हो। प्रश्नकर्त्ता ने उसी प्रश्न को तीन बार दुहराया और पैगम्बर ने तीनों बार वही उत्तर दिया।"* **(मुस्लिम, खंड 1 : 171-172 ; पृ. 65)**

इससे स्पष्ट है कि जन्नत पाने के लिए केवल अल्लाह और मुहम्मद में विश्वास करना सदाचारी होने से भी बढ़कर है।

2. अल्लाह और पैगम्बर मुहम्मद के आज्ञाकारी एवं सत्कर्मियों को जन्नत

अल्लाह निराकार है। किसी को दिखाई नहीं देता। मगर पैगम्बर मुहम्मद लोगों के सामने मौजूद थे, इसलिए कुरान व हदीसों में पैगम्बर के आज्ञापालन पर बल दिया गया है, जैसे-

(प) *"हे ईमान वालो ! अल्लाह की आज्ञा का पालन करो और 'रसूल' का कहना मानो और उनका भी कहना मानो जो तुममें अधिकारी लोग हैं।"* **(4 : 59)**

(पप) *"जिसने रसूल का आदेश माना, वास्तव में उसने अल्लाह का आदेश माना।"* **(4 : 80)**

(पपप) "अल्लाह के देवदूत ने कहा– *"जो कोई मेरा आज्ञा पालन करता है, वास्तव में वह अल्लाह का आज्ञा पालन करता है और जो कोई मेरी अवज्ञा करता है, वास्तव में वह अल्लाह की अवज्ञा करता है, और जो कोई इमाम (जिसे मैं नियुक्त करूँ) का आज्ञा पालन करता है, वास्तव में मेरा आज्ञा पालन करता है, और जो कोई इमाम की अवज्ञा करता है, वह मेरी अवज्ञा करता है।"* **(बुखारी, खंड 9 : 251 ; पृ. 189 ; माजाह, खंड 4 : 2859; पृ. 191)**

कुरान स्पष्ट कहता है कि जो अल्लाह और पैगम्बर का आज्ञापालन करता है, वह जन्नत का अधिकारी हो जाता है जैसे–

(पअ) *"ये अल्लाह की (निश्चित की गई) सीमाएँ हैं, और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों का पालन करेगा, उसे अल्लाह ऐसे बागों (जन्नत)में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रहीं होंगी। उनमें वह सदैव रहेगा और यही बड़ी सफलता है परंतु जो अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा, और उसकी सीमाओं का उल्लंघन करेगा उसे अल्लाह आग (जहन्नम) में डालेगा जिसमें वह सदैव रहेगा।"* **(4 : 13–14)**

(अ) *"निश्चय ही अल्लाह उन लोगों को, जो ईमान लाए और उन्होंने अनुकूल कर्म किए, उन्हें ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रहीं होंगी। वहाँ वे सोने के कंगनों और मोती से आभूषित किए जाएँगे और वहाँ उनका परिधान रेशमी होगा।"* **(22 : 23, एवं अन्य आयतें–3 : 15 ; 3 : 133 ; 5 : 12; 5 : 19 ; 7 : 42 ; 10 : 26 आदि।)**

(अप) *"अल्लाह का डर रखने वालों के लिए जन्नत का वादा है।"* **(13 : 35)**

अतः जन्नत केवल उसी मुसलमान को मिलेगा जो केवल अल्लाह का पूजक ओर पैगम्बर मुहम्मद का पूरा विश्वासी एवं आज्ञाकारी हो । वह उन्हें पूर्ण समर्पण करने वाला हो। यहाँ एक बात और समझने की है कि इस्लाम में सत्कर्मी या अनुकूल कर्म करने वाले का अर्थ शरियत के अनुसार कर्म करने वाला है, न कि केवल सदाचारी एवं परोपकारी आदि। पाखंडी मुसलमान को भी जन्नत नहीं मिलेगा। वह गैर–ईमानवाला जैसा ही है।

सत्कर्मी होने के लिए पैगम्बर मुहम्मद को अपना आदर्श पुरूष मानना, दिन में पाँच बार मक्का की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ना, प्रतिवर्ष रमज़ान के महीनें में रोज़ा रखना, जीवन में एक बार हज यात्रा करना और सातवीं सदी की अरबी संस्कृति का अक्षरशः पालनकर जीना आदि शामिल हैं। इसमें स्वतंत्र चिन्तन एवं विवेकानुसार कोई निर्णय लेना पूरी तरह वर्जित है। अतः आज के स्वतंत्र चिन्तन के युग में तथा–कथित जन्नत को पाने के लिए कुरान और हदीसों के आदेशों को अक्षरशः अपनाना यदि असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य है।

3. जिहाद और जन्नत

3.1 जिहाद करने वालों को जन्नत

दयालु अल्लाह ने जन्नत के भोग-विलास आदि के सुख चाहने वाले मुसलमानों के लिए एक समाधान सुझाया है, और सशर्त एक सौदा किया है कि यदि वे अल्लाह के मार्ग में गैर-मुसलमानों के विरूद्ध अपनी जान व माल सहित 'जिहाद' यानी 'युद्ध करें' और यदि उसमें वे मारे जाएँ तो निश्चित ही उनको जन्नत मिलेगा और यदि वे जीवित रहे तो वे विजितों के स्त्री, धन, संपत्ति आदि से संसार में सुख भोगेंगे। यह अल्लाह का उनसे वादा है। देखिए अल्लाह का सौदा-

(प) *"निस्संदेह अल्लाह ने 'ईमान' वालों से उनके प्राणों और उनके मालों को इसके बदले में खरीद लिया है कि उनके लिए 'जन्नत' है : वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं तो वे मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं। यह अल्लाह के जिम्मे ('जन्नत' का) एक पक्का वादा है 'तौरात' और 'इंजील' और 'कुरान' में और अल्लाह से बढ़कर अपने वादे को पूरा करने वाला कौन हो सकता है ?"* **(9 : 111)**

(पप) *"और यदि तुम अल्लाह के मार्ग में मारे गए या मर गए, तो अल्लाह की क्षमा और दयालुता उन सब चीजों से उत्तम है जिन्हें ये लोग इकठ्ठा करते हैं और यदि तुम मरे या मारे गए, अल्लाह ही के पास इकठ्ठे किए जाओगे।"* **(3 : 157-158)**

अल्लाह स्वंय घोषणा करता है कि जन्नत पाने के लिए घर पर बैठे एक सदाचारी मुसलमान की अपेक्षा *'अल्लाह के लिए जिहाद'* करने वाले का स्थान जन्नत में कहीं अधिक ऊँचा है, जैसे-

(पपप) *"बिना किसी आपत्ति के बैठे रहने वाले 'मोमिन' और अपने धन और प्राणों के साथ अल्लाह के मार्ग में 'जिहाद' करने वाले बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने बैठे रहने वालों की अपेक्षा अपने धन और अपने प्राणों से 'जिहाद' करने वालों का एक दर्जा बड़ा रखा है और हर एक से अल्लाह ने भलाई का वादा किया है, परंतु अल्लाह ने बैठे रहने वालों की अपेक्षा 'जिहाद' करने वालों का बदला बढ़ा रखा है।"* **(4 : 95)**

(पअ) *"तो जो लोग सांसारिक जीवन के बदले आख़िरत (परलोक) का सौदा करें उन्हें चाहिए कि 'अल्लाह के मार्ग में' युद्ध करें। जो अल्लाह के मार्ग में युद्ध करेगा तो चाहे वह मारा जाए या विजयी हो, उसे हम शीघ्र ही बड़ा बदला प्रदान करेंगें।"* **(4 : 74)**

(अ) *"हे ईमान वालो ! क्या मैं तुम्हें एक ऐसा व्यापार बताऊँ जो तुम्हें एक दुखद यातना से बचा ले ? ईमान रक्खो अल्लाह और उसके रसूल पर और 'जिहाद करो अल्लाह के मार्ग में', अपने मालों और*

अपनी जानों से। यही तुम्हारे लिए उत्तम है यदि तुम ज्ञान रखते हो। वह तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और तुम्हें ऐसे बागों (जन्नत) में दाखिल करेगा जिसके नीचे नहरें बह रहीं होंगी....यही बड़ी सफलता है।" **(61 : 10–12)**

यही बातें हदीसों में दुहराई गई हैं जैसे–

(प) पैगम्बर ने कहा–*"जन्नत तलवारों के सायों में बसती है।"* **(बुरवारी, खंड, 4 : 73 ; पृ. 55)**

(पप) पैगम्बर ने कहा–*"जो किसी दूसरे की हत्या करता है, उसकी सम्पत्ति हत्यारे की हो जाती है।"* **(माजाह, खंड 2 : पृ. 182)**

अतः जो कोई मुसलमान किसी गैर-मुसलमान से '*अल्लाह के लिए जिहाद*' यानी 'युद्ध' करता है, वह निश्चित रूप से जन्नत में प्रवेश का अधिकारी हो जाता है। अतः समझने की बात यह है कि एक तरफ दयालु अल्लाह जन्नत प्राप्ति को जीवन की सफलता बताता है और दूसरी ओर वही अल्लाह एक मुसलमान को एक गैर-मुसलमान द्वारा इस्लाम अस्वीकार करने पर उससे युद्ध करने एवं उसकी हत्या करने के लिए अनेक प्रलोभन देता है तथा 'जन्नत' देने के बदले उसकी जान का सौदा करता है। आखिर अल्लाह गैर-मुस्लिमों की जानों का प्यासा क्यों है ?

3.2 जिहाद में सहयोगियों को भी जन्नत

इतना ही नहीं, अल्लाह केवल स्वंय जिहाद करने वालों को निश्चय ही जन्नत देने का वादा करता है, बल्कि उनको भी जन्नत देने का वादा करता है जो कि जिहाद में स्वंय भाग न लेकर भी जिहाद की सफलता में किसी भी प्रकार का सहयोग देते हैं, जैसे कि, जिहाद के लिए हथियार देना, आर्थिक सहायता करना, आवश्यक साधन जुटाना, जिहादी के परिवार की उसकी अनुपस्थिति में देखभाल करना, जिहाद के लिए युवक-युवतियाँ को तैयार करना, उन्हें गाज़ी बनाना, उन्हें प्रशिक्षित करना आदि।

आश्चर्य की बात तो यह है कि अल्लाह और पैगम्बर मुहम्मद दोनों ही, इस बात पर बल देते हैं कि प्रत्येक मुसलमान जिहाद संबंधी किसी न किसी काम से अवश्य जुड़ा हो। यदि वह कुछ न भी करे परंतु यदि सच्चे मन से घर बैठे जिहाद करने का संकल्प भी कर ले तो भी वह जन्नत का हक़दार बन जाता है। देखिए प्रमाण–

(प) "अल्लाह के दूत ने कहा–*जो कोई अल्लाह के मार्ग में युद्ध करने वाले को हथियार प्राप्त कराता है तो उसे किसी भेदभाव के बिना, वही पुरस्कार मिलता है जो कि किसी योद्धा को दिया जाता है।"* **(माजाह, खंड 4 : 2759 ; पृ. 134)**

(पप) "पैगम्बर ने कहा–*जो कोई अल्लाह के मार्ग में किसी योद्धा को युद्ध की सामग्री दिलाता है तथा युद्ध में लड़ने के कारण उसकी अनुपस्थिति में उसके परिवार की देखभाल करता है तो उसके ये कार्य अल्लाह के मार्ग में युद्ध करने के समान हैं।"* **(दाऊद, खंड 2 : 2503 ; पृ. 695)**

(*iii*) "अल्लाह के देवदूत ने घोषणा की–*"जो कोई अल्लाह के मार्ग में कुछ भी (ऊँट, भेड़, धन आदि) खर्च करता है तो उसे 'जन्नत के दरवाजे' पर बुलाया जाएगा तथा जिहादी को 'जिहाद द्वार' से प्रवेश कराया जाएगा।"* **(मुवट्टा : 995 ; पृ. 212)**

(*iv*) पैगम्बर ने कहा–*"जो कोई अल्लाह के मार्ग में जाने के लिए किसी गाज़ी को तैयार करता है, और जो कोई अल्लाह के मार्ग में जाने वाले गाज़ी के आश्रितों की भलीभाँति देखभाल करता है तो उसे गाज़ी के ही समान पुरस्कार दिया जाएगा।"* **(बुरवारी, खंड 4 : 96 ; पृ. 68)**

(*v*) *"अबू हुरेरा ने बतलाया कि अल्लाह के देवदूत ने कहा–जो कोई अल्लाह और उसके दूत में विश्वास रखता है तथा नमाज और रोज़े रखता है, तो यह अल्लाह का कर्त्तव्य बन जाता है कि वह उसे जन्नत में प्रवेश कराए; चाहे वह अल्लाह के मार्ग में लड़ा हो या अपने जन्म स्थान पर बैठा रहा हो। उन्होंने (लोगों ने) कहा कि क्या हम यह शुभ समाचार लोगों को दे दें ? पैगम्बर ने कहा "जन्नत की एक सौ श्रेणियाँ हैं जिन्हें कि अल्लाह ने उनके लिए बनाया है जो 'अल्लाह के मार्ग में' लड़ते हैं तथा इनकी दो श्रेणियों के बीच इतना अंतर है जितना कि ज़मीन और आसमान में। इसलिए जब तुम अल्लाह से माँगो तो 'फिरदौस जन्नत माँगना' और निश्चय ही यह 'जन्नत' सबसे ऊँचा और विस्तृत 'जन्नत' है और इसके ऊपर दयालु अल्लाह का सिंहासन है जहाँ से कि जन्नत की नहरें बहती हैं।"* **(मिश्कत, खंड 2 : 1 ; पृ. 338)**

(*vi*) अल्लाह के देवदूत ने कहा–*"जो कोई अल्लाह के मार्ग में योगदान भेजता है और अपने घर पर ही बना रहता है, उसे प्रत्येक दिरहम (अरबी सिक्का) के बदले सात सौ दिरहम मिलेंगे और जो कोई स्वंय अल्लाह के मार्ग में लड़ता है, और इस काम के लिए खर्च भी करता है उसे प्रत्येक दिरहम के बदले सत्तर हज़ार दिरहम मिलेंगे।"* **(मिश्कत, खंड 2 : 64 ; पृ. 359–360)**

(*vii*) ''अबू मसूद अल–अंसारी ने बतलाया कि एक आदमी नाक से बंधी एक ऊंटनी लेकर आया और कहा कि यह '*अल्लाह के मार्ग के लिए है।*' इस पर पवित्र पैगम्बर ने कहा–*"तुम्हें इसके बदले में क़ियामत के दिन ऐसी ही नाक से बँधी सात सौ ऊँटनियाँ मिलेंगी।*'' **(मिश्कत, खंड 2 : 13 ; पृ. 341–342)**

इसके अलावा, जो किसी गैर–मुसलमान को समझा बुझाकर या वाणी से (उपदेश) देकर इस्लाम में धर्मान्तिरित कराता है तथा इस्लाम के प्रचार–प्रसार के लिए कलम से पत्र–पत्रिकाओं में लेख एवं पुस्तकें लिखकर जिहाद करता है, उसे भी जन्नत मिलेगी। इस प्रकार इस्लाम में जन्नत देने के नाम पर मुस्लिम समाज के सभी वर्गों के लोगों को जिहाद की विभिन्न गतिविधियों में से, किसी न किसी से, जुड़ने का बार–बार आह्वान किया गया है।

उपरोक्त हदीसों से सुस्पष्ट है कि जन्नत तो अल्लाह और पैगम्बर में विश्वास, नमाज, रोज़े, हज, सदाचार और सत्कर्मों से भी मिल सकता है, लेकिन वह अनिश्चित और बहुत आत्म संयम व सदाचार के बाद ही संभव है परंतु गैर–मुसलमानों को युद्ध द्वारा मुसलमान बनाने और उनके देश को इस्लामी राज्य बनाने के लिए युद्ध (जिहाद) करने पर पापी और दुराचारी व्यक्ति को भी अल्लाह की तरफ से

जन्नत की गारंटी है। इसके अलावा यह भी सुस्पष्ट है कि जन्नत पाने के लिए किसी भी प्रकार की जिहादी गतिविधि से जुड़ना न केवल सरल है, बल्कि उच्चतर श्रेणी का जन्नत मिलना भी सुनिश्चित है।

3.3 जिहाद का महत्त्व

कुरान और हदीसें गैर-मुसलमानों के विरूद्ध जिहाद के महत्त्वों, उसकी विशेषताओं और पुरस्कार के रूप में, जन्नत के भोग-विलासों के प्रलोभनों से भरी पड़ी हैं। भले ही वे प्रलोभन झूठे, खोखले एवं सपने मात्र ही क्यों न हों ! देखिए कुछ उदाहरण–

(प) पैगम्बर ने कहा–*"यदि कोई मनुष्य किसी जिहाद में सिर्फ इतनी देर के लिए भाग लेता है जितना समय ऊंटनी का दूध निकालने में लगता है, तो वह 'जन्नत पाने का अधिकारी हो जाता है।"* **(माजाह, खंड 2 ; पृ. 173)**

(पप) *"जिहाद में भाग लेने के लिए जो यात्रा करता है और मार्ग में उसे जो धूलकण लगते हैं, वे धूलकण क़ियामत के दिन उसके लिए सुगंध बन जाएँगे।"* **(माजाह, खंड 2 ; पृ. 167)**

(पपप) पैगम्बर ने कहा–*"लड़ाई के मैदान में एक रात भी अल्लाह का सैनिक बनकर, घर बैठे दो हजार वर्ष तक उसकी प्रार्थना करने से बेहतर है।"* **(माजाह, खंड 2 ; पृ. 166)**

(पअ) पैगम्बर ने कहा–*"जो व्यक्ति समुद्री लड़ाई में शहीदी पाता है, वह मैदानी लड़ाई में दो शहीदियों के बराबर होती है।"* **(माजाह, खंड 2 ; पृ. 168)**

(अ) पैगम्बर ने कहा–*"जिस किसी ने एक घोड़े को केवल 'जिहाद' में इस्तेमाल के उद्देश्य से पाला है तो उसके खिलाए प्रत्येक दाने के बदले अल्लाह उसे एक-एक सद्गुण देगा।"* **(माजाह, खंड 2 ; पृ. 172)**

3.4 जिहादियों को अल्लाह के पुरस्कारों का आश्वासन

अल्लाह कुरान में जिहादियों को पुरस्कारों का आश्वासन देता है जैसे–

(प) *"तो जो लोग सांसारिक जीवन के बदले 'आखिरत' का सौदा करें, उन्हें चाहिए कि वे 'अल्लाह के मार्ग में युद्ध करें।' जो अल्लाह के मार्ग में युद्ध करेगा तो चाहे वह मारा जाए या विजयी हो, उसे जल्द हम बड़ा प्रतिदान प्रदान करेंगे।"* **(4 : 74)**

(पप) *"बिना किसी आपत्ति के बैठे रहने वाले 'मोमिन' अपने धन और प्राणों के साथ अल्लाह के मार्ग में 'जिहाद' करने वाले बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने बैठे रहने वालों की अपेक्षा, अपने धन और अपने प्राणों से 'जिहाद' करने वालों का एक बड़ा दर्जा रक्खा है।"* **(4 : 95)**

(पपप) *"और जो कोई अपने घर से अल्लाह और उसके 'रसूल' की ओर 'हिजरत' करने निकले, फिर उसकी मृत्यु आ जाए, तो उसका प्रतिदान अल्लाह के जिम्मे हो गया।"* **(4 : 100)**

(पअ) *"जो लोग 'ईमान' लाए और 'हिजरत' की और अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जानों से 'जिहाद' किया, अल्लाह के यहाँ (उनके लिए) बड़ा दर्जा है और वही हैं जो सफलता प्राप्त करने वाले हैं। उन्हें उनका 'रब' शुभ-सूचना देता है, अपनी दयालुता और रज़ामंदी की, और ऐसे बागों*

(जन्नत) की जिनमें उनके लिए स्थायी सुख हैं, उनमें वे सदैव रहेंगे। निसंदेह अल्लाह के पास बड़ा बदला (इनाम) है।" **(9 : 20–22)**

(अ) *"और जिन लोगों ने अल्लाह के मार्ग में घर-बार छोड़ा, फिर कत्ल कर दिए गये या मर गये, अल्लाह उन्हें अच्छी रोज़ी प्रदान करेगा।"* **(22 : 58)**

(अप) पैगम्बर ने कहा–*"जो व्यक्ति प्रसन्नता से अल्लाह को अपना स्वामी, 'इस्लाम' को अपना मज़हब, मुहम्मद को अपना पैगम्बर मान लेता है, वह निश्चय ही 'जन्नत' में घुसने का अधिकारी हो जाता है....(फिर) भी एक ऐसा कार्य है जो 'जन्नत' में भी उसकी श्रेणी को सौ गुनी ऊँचा उठा देता है और इस एक श्रेणी की ऊँचाई दूसरे से इतनी अधिक होती है जितनी कि पृथ्वी से लेकर आसमान तक.. ..वह कार्य है ?....'अल्लाह के मार्ग में जिहाद' ! 'अल्लाह के मार्ग में जिहाद' !"* **(मुस्लिम, खंड 3 : 4645, पृ. 1260)**

(अपप) *"एक आदमी, जो खजूर खा रहा था ने, पैगम्बर मुहम्मद से पूछा "यदि मैं जिहाद से मारा जाऊं तो कहाँ जाऊँगा ? पैगम्बर ने जवाब दिया "जन्नत में।" उस आदमी ने (खजूर बिना खाए) उन्हें फेंक दिया और युद्ध में लड़ा, जब तक कि मारा नहीं गया।"* **(मुस्लिम, खंड 3 : 4678, पृ. 1266)**

(अपपप) *"जो कोई अल्लाह के मार्ग में युद्ध करने जाता है, उस पर 'ईमान' लाता है और अपने पैगम्बर की सच्चाईयों को मानता है, उसकी समस्याओं का सारा जिम्मा अल्लाह ने ले रखा है, उसकी देखभाल की जिम्मेदारी अल्लाह की है और वह उसे या तो (मरने पर) 'जन्नत' दिलवा देता है या (जीवित रहने पर) उसे फिर उसके घर वापिस लाएगा, पुरस्कार (अथवा माले गनीमत) सहित।"* **(मुस्लिम, खंड 3 : 4626 पृ. 1256)**

जिहाद के उपरोक्त पुरस्कारों का विश्वास कर यदि नई पीढ़ी–शिक्षित या अशिक्षित, सभी एक अच्छा सदाचारी मुसलमान बनने की अपेक्षा 'जिहादी' गतिविधियों की ओर आकर्षित होती है तो इसमें आश्चर्य क्या है ? वास्तविक स्थिति यह है कि इस्लाम में जिहाद द्वारा जन्नत की गारंटी और वहाँ सैक्स और लूट के प्रलोभन इस्लाम के प्रसार के सबसे बड़े कारण रहे हैं। 'जिहाद' इस्लाम का अभिन्न अंग है या यूं कहें कि 'जिहाद' ही इस्लाम है, और इस्लाम ही जिहाद है, तो अनुचित न होगा। जिहाद और जन्नत की जोड़ी के बिना इस्लाम का कोई अस्तित्व नहीं है।

4. फ़िदायीन हमले गैर-इस्लामी

4.1 क्या फ़िदायीन हमले भी जिहाद हैं ?

गत कुछ वर्षों से कट्टरपंथी एवं जिहादी संगठनों ने अपने राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए फिदायीन (आत्मघाती) हमलों का रास्ता अपनाया हुआ है। ये आत्मघाती हमले, विशेषकर, 1984 के बाद से, 'जिहाद' के नाम पर सारे विश्व में सक्रिय हैं। ये हमले अर्जेंटाइना से लेकर अलजीरिया, क्रोशिया, चीन, इंडोनेशिया, अमरीका, अफ़गानिस्तान, ईराक, यू. के, इस्राइल, भारत व पाकिस्तान आदि देशों में आम बात हैं। वांशिगटन एजेन्सी **(जाग 24.4.2008)** के अनुसार 18.4.1983 से 2007 तक आत्मघाती हमलों में इक्कीस हजार तीन सौ पचास निरपराध लोग मारे गए तथा पचास हजार से अधिक घायल हुए हैं। अमरीकी विशेषज्ञों के अनुसार केवल 2007 में ही विश्व में 856 हमले हुए। इसी तरह इस्लामी देश पाकिस्तान में अकेले 2007 में 56 आत्मघाती हमले हुए, जिनमें वहाँ की पूर्व प्रधानमंत्री बेनज़ीर भुट्टो (27 दिसम्बर 2007) सहित, 1158 लोग मारे गए। भारत में भी 1991 से लेकर 102 हमलों में से, 98 जम्मू-कश्मीर में हुए। **(पायो. 21.3.2008)**

4.2 इस्लाम में भी आत्महत्या पाप

इस्लाम में भी, अन्य धर्मों के समान, आत्महत्या को एक निंदनीय कृत्य माना गया है। पवित्र पैगम्बर मुहम्मद ने कहा-*"जो कोई किसी चीज से आत्महत्या करता है, उसे क़ियामत के दिन उसी से दंड दिया जाएगा।"* **(मिश्कत, खंड. 2 : पृ. 497)** तथा *"जो कोई बंदूक से अपने को मारता है (क़ियामत के दिन) दोज़ख़ में उसकी बंदूक उसके हाथ में होगी और वह उससे अपने पेट में मार रहा होगा।"* **(मिश्कत, खंड. 2 : 55 ; पृ. 498)** अतः इस्लाम के अनुसार एक फिदायीन (आत्मघाती) दोज़ख़ या जहन्नम में जाएगा।

प्रारंभिक इस्लाम में आत्मघाती हमलों की प्रथा नहीं थी। इस निन्दनीय कार्य की प्रेरणा द्वितीय विश्वयुद्ध (1944-45) में जापानी 'कामीकाजे पद्धति' से ली गई प्रतीत होती है जब एनसाइन औगाबा आदि ने 11 मई 1945 को यू. एस. एस. बंकर हिल पर आत्मघाती हमला किया जिसमें 2600 में से 372 अमरीकी सैनिक मारे गए। **(जनसंघ टुडे, मार्च, 2008)**

इस्लामी कट्टरपंथियों ने इस विधि को शायद इसलिए चुना क्योंकि यह विधि कम खर्चीली, शत्रु को अधिक हानिकारी व प्रभावशाली और आंतकित कर मनोवैज्ञानिक दवाब बनाने वाली है, भले ही इससे राजनैतिक उद्देश्य तत्काल पूरा सफल न हो।

4.3 फिदायीन हमले अमानवीय एवं गैर-इस्लामी

कट्टरपंथी संगठन इन आत्मघाती हमलों को भले ही अल्लाह के मार्ग में 'जिहाद' बतलाते हों, परंतु वास्तव में आत्मघाती हमले गैर-इस्लामी हैं क्योंकि ये 'जिहाद' की पारम्परिक परिभाषा के विपरीत हैं। जैसे-जिहाद मुसलमानों को अच्छा मुसलमान बनने और गैर-मुसलमानों को इस्लाम अपनाने के लिए की जाती है। जिहाद में पहले गैर-मुसलमानों को इस्लाम स्वीकारने की दावत दी जाती है और केवल इस्लाम अस्वीकारने पर ही उनसे युद्ध करने की आज्ञा दी गई है। इसके अलावा जिहाद में बच्चों एवं स्त्रियों को कत्ल करना मना है। **(मुस्लिम, खंड. 3 : 4294 ; पृ. 1137)**। परंतु ये आत्मघाती हमले जो गैर-मुस्लिम देशों में वहाँ के भीड़-भाड़ वाले इलाकों, बाजारों, सार्वजनिक स्थानों, उनके पूजा गृहों, मंदिरों, चर्चो, सार्वजनिक वाहनों, रेलगाड़ियों, बसों, ट्रामों आदि में करने से तो वहाँ सभी धर्मों के निरपराध स्त्री, पुरूष, बच्चे आदि सभी मारे जाते हैं। भारत, यू.के., अमरीका-जैसे गैर-इस्लामी देशों में, जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं, गैर-मुसलमानों के साथ मुसलमान और उनके स्त्री, बच्चे आदि सभी मारे जाते हैं। परंतु शरियत के अनुसार एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान द्वारा मारा जाना गैर-इस्लामी है। इसलिए आत्मघाती हमले कुरान, जिहाद और शरियत सभी की मान्यताओं के विरूद्ध होने के कारण गैर-इस्लामी हैं। अतः अल्लाह भी ऐसे आत्मघातियों को जन्नत नहीं, बल्कि जहन्नम देगा। परंतु आश्चर्य है कि कोई भी मुल्ला, मौलवी और इस्लाम का विद्वान इस अमानवीय, क्रूर, जघन्य और गैर-इस्लामी कुकृत्य की सार्वजनिक निंदा नहीं करता है।

5. जन्नत का स्वरूप एवं जीवन

5.1 जन्नत का भौतिक स्वरूप

इस्लामी धर्मग्रंथो के अनुसार जन्नत अति विस्तृत है जिसमें लाखों, लोग स्वच्छंदता से रह सकते हैं। उनके लिए सोने-चाँदी से बने रत्नजड़ित व बहुमंजिले भवन हैं। शुष्क प्रदेश, अरब के निवासियों को, जन्नत में भरभूर जल और हरियाली मिलने का भरोसा दिलाया गया है एवं कुरान में स्वच्छ जल की नदियाँ, नहरें, चश्में और बागों संबंधी पचासों आयते हैं। वहाँ घनी छायादार पेड़ों के अनेक बाग-बगीचें हैं जिनमें विभिन्न प्रकार के फल और मेवाओं जैसे अनार, जैतून, खजूर, केले के वृक्षों के अलावा अंगूर आदि की बेलें भी हैं **(2 : 66)**। इन वृक्षों पर लटकने वाले फल इतने नीचे हैं कि जन्नत वाले आसानी से तोड़कर इनका रसास्वादन कर सकते हैं **(47 : 15)**। जन्नत में शाकाहारी व गैर-शाकाहारी, सभी प्रकार के भोजनों की कमी नहीं है। सांसारिक सुखों की प्रत्येक वस्तु वहाँ पर्याप्त मात्रा में मौजूद है। यहाँ का मौसम सदाबहार है, न अधिक गर्मी, न अधिक सर्दी।

देखिए कुछ प्रमाण-

(प) "उस जन्नत की ओर बढ़ो जिसका विस्तार आकाशों और धरती जैसा है।" **(3 : 133 ; 57 : 21)**

(पप) "इन बागों में पवित्र निवास गृहों का वादा है।" **(9 : 22 ; 32 : 19)** / *"अलबत्ता जो लोग अपने रब से डरकर रहे उनके ऊपरी मंजिल पर कक्ष होंगे जिनके ऊपर भी निर्मित कक्ष होंगे।"* **(39 : 20)**

(पपप) "निस्संदेह डर रखने वाले 'बागों' और (स्वच्छ पानी के) स्रोतों में होंगे। प्रवेश करो इनमें निर्भयता पूर्वक सलामती के साथ।" **(15 : 45-46)**

(पअ) "अल्लाह के देवदूत से पूछा गया-"जन्नत की नींव किस चीज की है? उन्होंने उत्तर दिया-"एक ईंट सोने की और एक ईंट चाँदी की और उसका गारा तेज इत्रों और मोतियों और पन्ना के पत्थरों का है और इसकी मिट्टी केसर की हैं।" **(मिश्कत, खंड. 4 : 18 ; पृ. 166)**

(अ) "अल्लाह के देवदूत ने कहा-"जन्नत के एक सौ दरवाज़े हैं। प्रत्येक दो दरवाज़ों के बीच इतनी दूरी है जितनी कि ज़मीन और आसमान के बीच और इनमें से फिरदौस का दरवाज़ा सबसे ऊपर है। जन्नत की चार प्रमुख नदियाँ वहाँ से ही निकलती हैं और उसके ऊपर अल्लाह का सिंहासन है।" **(मिश्कत, खंड. 4 : 6 ; पृ. 161)**

(अप) *"पैगम्बर ने कहा–"जन्नत में एक पेड़ है जिसकी छाँव में एक फुर्तीला और तेज दौड़ने वाला घुड़सवार एक सौ वर्षों तक दौड़ने के बाद भी उस (दूरी को) पूरा न कर सकेगा।"* **(मुस्लिम, खंड. 4 : 6786 पृ. 1779; मिश्कत, खंड. 4 : 4 ; पृ. 160)**

(अपप) *अल्लाह के दूत ने कहा–"जन्नत में ऐसा कोई पेड़ नहीं है जिसका तना सोने का न हो।"* **(मिश्कत, खंड. 4 : 19 ; पृ. 166)**

(अपपप) *"अबू हुरेरा ने बतलाया कि पैगम्बर ने कहा कि जन्नत की नदियों में सैहान, जैहान, यूफ्रेटस और नील आदि नदियाँ हैं।"* **(मुस्लिम, खंड. 4 : 6807 ; पृ. 1784; मिश्कत, खंड. 4 : 16, पृ. 165)** *यानी वर्तमान इराक की यूफ्रेटस और मिश्र की नील नदी भी जन्नत में है। आश्चर्य है!*

(पग) *"अल्लाह के देवदूत ने कहा–जन्नत में पानी, शहद, दूध और मदिरा का एक-एक समुद्र है, बाद में उनसे नदियाँ निकलेंगी।''* **(मिश्कत खंड. 4 ; 38, पृ. 175)**

सार की बात यह है कि जन्नत में अरब जैसे, जल और हरियाली न्यून, शुष्क प्रदेश में रहने वाले बदायूनों के लिए जीवन की वे सभी सुविधाएँ भरपूर मात्रा में मौजूद हैं जो कि अरेबिया में बहुत कम या बिल्कुल नहीं हैं। क्या मरूस्थली प्रदेश के रहने वालों के लिए जन्नत के ये प्रलोभन गैर-मुसलमानों के विरूद्ध लड़ने के लिए पर्याप्त नहीं थे ?

5.2 जन्नत का जीवन

इस्लाम ने मुसलमानों को गैर-मुसलमानों के विरुद्ध 'जिहाद' (युद्ध) करने के बदले में न केवल जन्नत की गारंटी दी है बल्कि उन सभी असीमित, सुखों की भी गारंटी दी है, जो वे चाहें। इसमें किसी प्रकार की कोई सीमा या बंधन नहीं है। कुरान **(43 : 71)** के अनुसार "वहाँ (जन्नत में) वह हर चीज़ होगी जिसे आत्माएँ चाहें और आँखें जिससे लज्जत पाएँ और तुम उसमें सदैव रहोगे"। अल्लाह के उपरोक्त प्रकार के आश्वासनों के आधार पर रसूलुल्लाह ने कहा : "निश्चित रूप से तुमने जो चाहा है (जन्नत में) उससे दुगुना मिलेगा। अबू सैय्यद ने कहा कि तुमने जो चाहा उसका (जन्नत में) दस गुना मिलेगा" **(बयात, पृ. 6)**

अबू हुरेरा के अनुसार पैगम्बर ने कहा कि स्वयं अल्लाह कहता है कि मैंने अपने निष्ठावान अनुयायियों के लिए (जन्नत में) वे सुविधाएँ प्रदान की हैं जिन्हें पहले किसी आँख ने देखा नहीं, किसी कान ने सुना नहीं और न किसी व्यक्ति ने उनकी कभी कल्पना की होगी।" **(बयात, पृ. 5)**

जन्नत के जीवन की एक झाँकी कुरान और हदीसों के निम्नलिखित कथनों से सुस्पष्ट है–फिर वह वहाँ न बूढ़ा होगा, न उसका शरीर क्षीण होगा और न वह वहाँ कभी बीमार पड़ेगा। वहाँ वह न मरेगा तथा अनन्त काल तक जवान ही रहकर जन्नत के भोगविलासों का आनंद लेता रहेगा। वहाँ कोई भी कुँवारा नहीं रहेगा तथा हर एक की जन्नत की बड़ी-बड़ी काली आँखों वाली अति सुंदर हूरों से शादी करा दी जाएगी। वह वहाँ सोने-चाँदी के बने भवनों में अपनी पत्नियों के साथ निर्विघ्न एकान्त में आनंद से रहेगा। यहाँ उसे खाने को अनेकों प्रकार के स्वादिष्ट भरपूर, भोजन एवं पीने को छलकते जाम, बढ़िया शराब एवं पेय मिलेंगे जिन्हें सुंदर आभूषणों एवं आकर्षक रेशमी कपड़ों से सुसज्जित सुंदर किशोर

घूम-घूमकर उन्हें पेश करेंगे। जन्नत वाले ही नहीं, बल्कि जन्नत की हूरें और ये किशोर (गिलमान) भी अल्लाह की दी हुई आयु के ही बने रहेंगे। जन्नत वाले रेशमी कपड़े पहने व हीरे, जवाहरात एवं सोने के आभूषणों से सुसज्जित ऊँचे तख्तों पर अपनी पत्नियों के साथ तकिया लगाए बैठकर स्वादिष्ट भोजन एवं मदमाती शराब का आनंद लेंगे। घूमने-फिरने के लिए उन्हें तेज गति से दौड़ने वाले घोड़े मिलेंगे, तथा बिना मूल्य दिए मनपसंद चीजें पाने के लिए बाजार भी होंगे। उन्हें प्रसन्न रखने के लिए स्त्रियाँ गाने गाएँगी, वहाँ न कमाने की चिंता होगी और न कोई अभाव होगा। न कोई झगड़ा-फिसाद, न मन-मुटाव। इस प्रकार मुसलमानों को एक बार गैर-मुस्लिमों के विरुद्ध 'जिहाद' करने के फलस्वरूप जन्नत में उन्हें जिन सुखों का प्रलोभन दिया गया है; उन्हें वे सांसारिक जीवन में कभी भी, किसी प्रकार प्राप्त नहीं कर सकते हैं। देखिए कुछ प्रमाण–

(प) *"किसी मुसलमान की 'जिहाद' में मरते समय आयु कुछ भी क्यों न हो, जन्नत में अल्लाह उसको पच्चीस-तीस वर्ष जैसा नौजवान बना देगा।"* **(मिश्कत, खंड 4 : 27 ; पृ. 168)**

(पप) *"निस्संदेह नेक लोग (जन्नत की) नेमतों में होंगे। मसनदों पर से देख रहे होंगे, तुम्हें उनके चेहरों से नेमतों की ताज़गी और छटा का अनुभव हो रहा होगा। उन्हें खालिस शराब पिलाई जा रही होगी जो मुहरबन्द होगी। मुहर उसकी मुश्क की होगी, बढ़-चढ़कर अभिलाषा करने वालों को इसकी अभिलाषा करनी चाहिए और उसमें 'तसनीम' का मिश्रण होगा। हाल यह है कि वह एक स्रोत है जिस पर बैठकर सामीप्य प्राप्त लोग पिएंगे।"* **(83 : 22–28)**

(पपप) *"उनके लिए जानी-बूझी रोज़ी है, मेवे हैं। और उनका सम्मान किया जाएगा नेमत-भरी 'जन्नतों में, तख्तों पर आमने-सामने बैठे होंगे; निथरी बहती (शराब के स्रोत) से मद्य भर-भरकर उनके बीच फिराए जायेंगे, उज्जवल, पीने वालों के लिए आस्वाद, न उसमें कोई खराबी होगी और न वे उससे मतवाले होंगे और उनके पास निगाहें बचाने वाली, (लज़ीली) सुंदर आँखों वाली स्त्रियाँ होंगी, ऐसी (निर्मल) मानों छिपे हुए अंडे हैं।"* **(34 : 41-49)**

(पअ) *"अलबत्ता अल्लाह के उन बन्दों की बात और है जो उसके चुने हुए हैं। उनके लिए जानी-बूझी रोज़ी है, मेवे, और उनका सम्मान किया जाएगा। नेमत भरी जन्नतों में, तख्तों पर आमने-सामने बैठे होंगे : निथरी बहती (शराब के स्रोत) से मद्य भर-भरकर उनके बीच फिराए जाएँगे, उज्जवल, पीने वालों के लिए आस्वाद, न उसमें कोई खराबी होगी, न वे उससे मतवाले होंगे। और उनके पास निगाहें बचाने वाली, सुंदर आँखों वाली स्त्रियाँ होंगी ऐसी (निर्मल) मानो छिपे हुए अंडे हैं।"* **(37 : 40-49)**

(अ) *"और डर रखने वालों के लिए निश्चय ही अच्छा ठिकाना है, सदैव रहने की 'जन्नतें', जिनके द्वार उनके लिए खुले होंगे, उनमें, वे तकिया लगाए बैठे होंगे, वहाँ वे खूब मेवे और पेय मंगवाते होंगे और उनके पास निगाहें बचाए रखने वाली (लजीली) समायु, स्त्रियाँ होंगी। यह है वह कुछ जिसका, 'हिसाब के दिन' के लिए तुमसे वादा किया जा रहा है। यह हमारा दिया हुआ है, जिसका कभी अंत न होगा।"* **(38 : 49-54)**

(अप) "जो हमारी 'आयतों पर ईमान' लाए और 'मुस्लिम' थे–दाखिल हो जाओ 'जन्नत' में पूरी खुशियों के साथ तुम और तुम्हारे संघाती (पत्नियाँ)। उस (जन्नत वालों) के आगे सोने की तश्तरियों और प्यालें गर्दिश करेंगे, और वहाँ हर वह चीज होगी आत्माएँ जिसे चाहें और आँखें जिससे लज्ज़त पाएँ और तुम उसमें सदैव रहोगे और यह वह 'जन्नत' है जिसके तुम वारिस बनाए गए उन कर्मों के बदले में जो तुम करते थे। तुम्हारे लिए यहाँ बहुत से मेवे हैं जिन्हें तुम खाओगे।" **(43 : 69–73)**

(अपप) "निश्चय ही अल्लाह का डर रखने वाले ऐसे स्थान में होंगे जहाँ कोई खटका न होगा। बागों और जल-स्रोतों के बीच पतले और गाढ़े रेशमी वस्त्र पहनेंगे, और एक-दूसरे के आमने-सामने होंगे। यह होगा ! और हम उनका विवाह बड़ी और सुंदर आँखों वाली परम रूपवती स्त्रियों से कर देंगे। वे वहाँ निश्चिन्ततापूर्वक हर प्रकार के मेवे तलब करते रहेंगे। वहाँ वे मृत्यु का मज़ा कभी न चखेंगे, बस पहली मृत्यु (दुनिया में) जो आ चुकी वह आ चुकी।" **(44 : 51–57)**

(अपपप) "उस 'जन्नत' का हाल यह है कि जिसका वायदा डर रखने वालों से किया गया है, उसमें पानी की नहरें हैं जिसमें सडाँध नहीं, और दूध की नहरें हैं जिनका मज़ा बदला नहीं, और शराब की नहरें हैं जो पीने वालों के लिए स्वादिष्ट हैं और साफ-सुथरे शहद की नहरें है ; और उनके लिए वहाँ हर प्रकार के फल है और क्षमा उनके 'रब' की ओर से। **(47 : 15)**

(पग) "निश्चय ही डर रखने वाले बागों और नेमतों में होंगे जो कुछ उनके रब ने उन्हें दिया होगा, उसका आनंद ले रहे होंगे और इस बात से कि उनके रब ने उन्हें भड़कती हुई आग से बचा लिया–"मज़े से खाओ और पियो इन कर्मों के बदले में जो तुम करते रहे हो। पंक्तिबद्ध तख्तों पर तकिया लगाए हुए होंगे और हम बड़ी आँखों वाली हूरों (परम रूपवती स्त्रियों) से उनका विवाह कर देंगे। जो लोग ईमान लाए और उनकी संतान ने भी ईमान के साथ उनका अनुसरण किया, उनकी संतान को भी हम उनसे मिला देंगे और उनके कर्म में से कुछ भी कम करके उन्हें नहीं देंगे। हर व्यक्ति अपनी कमाई के बदले में बंधक है और हम उन्हें मेवे और मांस, जिसकी वे इच्छा करेंगे दिए चले जाएँगे। वे वहाँ आपस में प्याले हाथों-हाथ ले रहे होंगे जिसमें न कोई बेहूदगी होगी और न गुनाह पर उभारने वाली कोई बात और उनकी सेवा में सुरक्षित मोतियों के सदृश किशोर दौड़ते फिरते होंगे जो खास उन्हीं (की सेवा) के लिए होंगे।" **(52 : 17–24)**

(ग) "और जो कोई अपने 'रब' के आगे खड़े होने से डरा, उसके लिए दो उद्यान हैं,......वे फैली हुई टहनियों वाले हैं।....इनमें दो स्रोत प्रवाहित हैं....इनमें हर मेवे दो-दो प्रकार के हैं।....वे ऐसे बिछोनों पर तकिया लगाए हैं जिनके अंदर के हिस्से दबीज़ रेशम के हैं और इन उद्यानों के फल नीचे लटक रहे हैं।....इनमें निगाह बचाए रहने वाली (लज्जावती) स्त्रियाँ हैं जिन्हें इनसे पहले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया और न किसी 'जिन्न ने....(सुंदरता में) मानो वे लालमणि और प्रवाल हैं।....इसके सिवा दो उद्यान और भी हैं....वे बहुत ही हरे-भरे हैं....इनमें दो उबलते स्रोत हैं....इनमें मेवे, खजूर और अनार हैं....इनमें भली और सुंदर स्त्रियाँ हैं....सुंदर आँखों वाली (मृगनैनी) परम रूपवती स्त्रियाँ है, खेमों के भीतर ठहरी रहने वाली....जिन्हें इनसे पहले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया है और न किसी 'जिन्न' ने....वह

हरी-भरी मसनदों और अच्छे-अच्छे कालीनों पर टेक लगाए हुए हैं बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ?" **(55 : 46–77)**

(गप) *"तो दाहिने हाथ वाले (सौभाग्यशाली), कैसे होंगे दाहिने हाथ वाले !....वही (अल्लाह) के निकटवर्ती हैं, नेमतभरी जन्नतों में होंगे। अगलों में से तो बहुत-से होंगे, किन्तु पिछलों में से कम ही। जड़ित तख्तों पर, तकिया लगाए, आमने-सामने होंगे; उनके पास किशोर होंगे। जो सदैव किशोरावस्था ही में रहेंगे, प्याले और आफतावे (जग) और विशुद्ध पेय से भरा हुआ पात्र लिए फिर रहे होंगे—जिस (के पीने) से न तो उन्हें सिरदर्द होगा और न ही उनकी बुद्धि में विकार आएगा और स्वादिष्ट फल जो वे पसंद करें; और पक्षी का मांस जो वे चाहें, और बड़ी आँखों वाली हूरें, मानो छिपाए हुए मोती हों। यह सब उसके बदले में उन्हें प्राप्त होगा जो कुछ वे करते रहे। ....रहे सौभाग्यशाली लोग; ...वे वहाँ होंगे जहाँ बिन काँटो के बेर होंगे, और गुच्छेदार केले; दूर तक फैली हुई छाँव; बहता हुआ पानी; बहुत-सा स्वादिष्ट फल जिसका सिलसिला टूटने वाला न होगा, और न उस पर कोई रोक-टोक होगी। उच्चकोटि के बिछोने होंगे; (और वहाँ उनकी पत्नियों को) निश्चय ही एक विशेष उठान पर उठाया और हमने उन्हें कुंवारियाँ बनाया; प्रेम दर्शाने वाली और सम आयु।"* **(56 : 8–37)**

(गपप) *"अनास ने बतलाया कि अल्लाह के दूत ने कहा—"जन्नत में एक बाजार है जहाँ जन्नतवासी प्रत्येक शुक्रवार को यहाँ आऐंगें जहाँ की हवा से वे और अधिक सुंदर हो जाएँगे।"* **(मिश्कत, खंड. 4 : 7, पृ. 161-162 ; मुस्लिम, खंड. 4 : 6792 ; पृ. 1781)**

(गपपप) *"अबू हुरेरा ने सूचित किया कि अल्लाह के देवदूत न कहा कि—"जन्नत में रहने वालों के बाल व दाढ़ी नहीं होंगे। उनकी जवानी कभी समाप्त नहीं होगी। वे 30 से 33 वर्ष के ही रहेंगे और न उनके कपड़े ही पुराने होंगे।"* **(मिश्कत, खंड 4 : 26–27, पृ. 168)**

(गपअ) *"अली ने बतलाया कि अल्लाह के दूत ने कहा—"जन्नत में निश्चय ही पवित्र आँखों वाली स्त्रियों का एक एकीकरण होगा जो ऐसी आवाज में बोलेंगी जिसे कभी सुना नहीं गया। वे कहेंगी "हम सदैव जीवित रहेंगी और कभी नहीं मरेंगी और हम आनंद और समृद्धि में रहेंगी, कमी अभाव में नहीं और हम संतुष्ट रहेंगी और कभी असंतुष्ट नहीं रहेंगी। खुश किस्मत वे लोग हैं जो हमारे लिए हैं और जिनके लिए हम हैं।"* **(मिश्कत, खंड 4 : 37 पृ. 174)**

(गअ) *"अबू सैय्यद कहता है कि अल्लाह के देवदूत ने कहा कि जब कोई जन्नतवासी संतान चाहेगा तो उसका गर्भधारण, जन्म और विकास एक घंटे में हो जाएगा।"* **(मिश्कत, खंड 4 : 36 : पृ. 174)**

(गअप) *"तो अल्लाह ने उन्हें प्रफुल्लता और प्रसन्नता से सम्पन्न किया, और जो सब उन्होंने किया था उसके बदले में उन्हें 'जन्नत' और रेशमी कपड़े प्रदान किए; वे वहाँ न सूर्य का तपन देखते हैं और न कड़ाके का जाड़ा, और वहाँ उन पर छाया पड़ रही है और उसके मेवे झुकाकर बिल्कुल वश में कर दिए गए हैं, और उनके पास गर्दिश कर रहें हैं चाँदी के बर्तन और आबखोरे बिल्कुल शीशे हो रहे हैं, शीशे चाँदी के जिन्हें ठीक-ठीक अन्दाजे से रखा है और उन्हें वहाँ ऐसे मद्य का पान कराया जाता है जो ज़ज्जबील (सोंठ) मिलाकर तैयार किया गया है, यह वहाँ का एक स्रोत है जिसे 'सल्सबील' नाम दिया*

जाता है, उनके पास ऐसे लड़के आ जा रहे हैं जिनकी अवस्था सदा एक ही रहेगी। तुम उन्हें देखो तो समझोगे कि बिखरे मोती हैं, और वहाँ देखो तो तुम्हें दिखाई देगा परम सुख और महान राज्य, उनके ऊपर बारीक हरे रेशमी कपड़े हैं और दबीज़ रेशमी कपड़े भी और वे चाँदी के कंगनों से आभूषित किए गए हैं और उन्हें उनके रब ने स्वच्छ पेय पिलाया।" (76 : 11-21) बूढ़े न होने वाले लड़कों का यह फुसलाने वाला वर्णन सूरा (52) में भी मिलता है।

(गअपप) *"निस्संदेह डर रखने वालों के लिए बड़ी सफलता है–बाग हैं, और अंगूर और नवयुवतियाँ समान आयु वाली और छलकता मद्य-पात्र, वे वहाँ बकवास नहीं सुनेंगे और न कोई झूठ बदला है तुम्हारे 'रब' की ओर से-पुरस्कार हिसाब से।"* (78 : 31-36)

(गअपपप) *"निस्संदेह नेक लोग आनंद में होंगे, ऊँची मसनदों पर से देख रहे होंगे, तुम्हें उनके चेहरों से आनंद सुख की ताजगी का अनुभव हो जाएगा। उन्हें खालिस शराब पिलाई जा रही होगी जो मुहर बंद होगी।* मुहर उसकी मुश्क की होगी" (83 : 22-26)

(गपग) मुकिम ब. मौबिया ने बतलाया कि अल्लाह के दूत ने कहा–*"जन्नत में एक पानी का, एक शहद का, एक दूध का और एक पेय का समुद्र है। इनसे नदियाँ निकलेंगी।"* **(मिश्कत, खंड 4 : 38, पृ. 175)**

(गग) *"जाबेर ने सूचित किया कि एक आदमी ने पैगम्बर से पूछा कि क्या जन्नत के लोग सोएँगे ? उन्होंने उत्तर दिया "नींद मृत्यु का भाई है और जन्नत के लोग मरेंगे नहीं'"* **(मिश्कत, खंड 4 : 653 00)** यानी जन्नत के लोग सोएँगे नहीं; शायद भोगविलास में ही लगे रहेंगे।

5.3 शराब का आनन्द

जन्नत में पीने वालों के लिए शुद्ध शराब की नदियाँ बह रही हैं। आकर्षक पोशाकों से **सजेधजे** युवक विभिन्न प्रकार की शराब लिए परोस रहे हैं। लोग अपनी पत्नियों (सुंदर हूरों) के साथ शराब का आनंद ले रहे हैं। कभी वांछित शराब का गिलास खुद आ जाता है और बाद में खुद वापिस चला जाता है।

"अबू उमामाह ने कहा "निस्संदेह जन्नत का व्यक्ति, जन्नत की ही शराब पीना चाहेगा। तब एक गिलास उसके हाथ में आ जाएगा। वह उस गिलास से (शराब) पिएगा और समाप्त (होने पर) यह गिलास अपनी जगह वापिस पहुँच जाएगा" **(इन्ब अबी दुनिया)**। बयात लिखता है कि "जन्नत में पीने वाले को शुद्ध शराब मिलेगी जो न नशा करेगी और न जिससे सिरदर्द होगा" (पृ. 8)

यहाँ समझने की बात यह है कि कुरान में अल्लाह "शराब को गुनाह बताता है" (2 : 219) और कहता है 'तुम मदिरा से बचो ताकि तुम सफल हो सको।" (5 : 90)

इसी प्रकार हदीसों में पैगम्बर मुहम्मद शराब को हराम कहते हैं–

(प) *"प्रत्येक नशीला पेय हराम है"* **(माजाह, खंड-4 : 3388, पृ. 489)**

(पप)"इब्न उमर के अनुसार, पैगम्बर ने कहा–*"जो कोई इस दुनियाँ में शराब पीता है, वह दूसरी दुनियाँ (जन्नत) में शराब नहीं पिएगा"*। (**माजाह, खंड-4 : 3373, 4, पृ. 482**)

(पपप)अब्बू हुरेरा के अनुसार पैगम्बर ने कहा–*"वह जो शराब का आदी है, वह एक मूर्तिपूजक के समान है...वह जो शराब का आदी है वह जन्नत में दाखिल नहीं होगा"* (**माजाह, खंड 4 : 3375-76, पृ. 483**)

(पअ)पैगम्बर ने कहा–*"नशीले पदार्थ मत पिओ क्योंकि निस्संदेह यह सबसे बुरा कर्म है...सब बुराइयों की जड़ शराब है"* (**माजाह, खंड 4 : 3371, पृ. 481**)

परंतु आश्चर्य है कि जो अल्लाह कुरान में और पैगम्बर मुहम्मद हदीसों में, शराब पीने को हराम कहते हैं, वे ही जन्नत में गैर-मुसलमानों से 'जिहाद' करने वाले मुसलमानों के लिए पुरस्कार के रूप में शराब की नहरें बहाते हैं, तथा उन्हें मुहरबंद, खालिस और 'तसलीम'-मिश्रण की शराब पिलाते हैं, जिससे न नशा होता है, और न सिरदर्द !

5.4 सन्तान का सुख

"अबू सईद खुदरी के अनुसार रसूलुल्लाह ने कहा–"जब कोई ईमान वाला व्यक्ति जन्नत में एक संतान चाहता है तो गर्भाधान, जन्म और बच्चे का (तेंतीस वर्ष तक) विकास तत्काल हो जाएगा।" (**तिरमिधी, बयात, पृ. 49**)। बयात आगे लिखता है कि विद्वानों में इस बात में मतभेद है कि जन्नत में बच्चा होगा या नहीं। इब्न काथिर कहता है, *"तौऊस, मुजाहिद और इब्राहिम अनखी का मत है कि जन्नत में सैक्सुअल संभोग बिना बच्चे का जन्म होगा और यह ठीक है। दूसरे जन्नत में बच्चा नहीं होगा क्योंकि वहाँ इसकी जरूरत नहीं होगी। इस दुनियाँ में बच्चे का जन्म मानव जाति को चालू रखने के लिए आवश्यक है, जबकि जन्नत में उद्देश्य 'लंबे अरसे तक आनंद भोगना है। यही कारण है कि जन्नत में संभोग क्रिया में शुक्राणुओं का स्खलन यानी वीर्यपात नहीं होता है क्योंकि इससे आनंद समाप्त हो जाता है। फिर भी यदि जन्नत के लोग बच्चे चाहेंगे तो वे बच्चे तत्काल पाएँगे क्योंकि कुरान* (16.31) *में कहा है कि 'उनके लिए वहाँ वह सब कुछ होगा जो वे चाहेंगे"।* (**बयात, पृ. 49-50**)

5.5 भोजन व्यवस्था

अबू हुरेरा के अनुसार रसूलुल्लाह ने कहा *"जन्नत के सबसे निचले तल पर के व्यक्ति के पास सात मंजिलें होंगी और वह सातवें तल के नीचे छठे तल पर होगा। उसके पास तीन सौ नौकर भी होंगे जो कि उसके लिए सुबह और शाम तीन सौ खाने की प्लेटें लाएँगे। प्लेटें सोने और चाँदी की बनी होंगी और प्रत्येक प्लेट में एक-दूसरे से भिन्न प्रकार का खाना होगा। वह आखिरी प्लेट के स्वाद का आनंद पहली प्लेट के समान उठाएगा। नौकर उसके लिए तीन सौ ग्लास भी लाएँगे और प्रत्येक गिलास के पेय का प्रकार दूसरे से भिन्न होगा। वह आखिरी गिलास के पेय का आनंद पहले गिलास के समान उठाएगा. ..जन्नत में हर व्यक्ति की उसकी सांसारिक बीबियों के अलावा हूरों में से बहत्तर बीवियाँ भी होंगी और उनमें से एक की चौड़ाई एक मील की होगी।"* (**अहमद, अबू याला, बयात, पृ. 36-37**)

5.6 गाना–बजाना

"इब उमर के अनुसार रसूलुल्लाह ने कहा–*"निसंदेह जन्नत के लोगों की बीवियाँ अपने पतियों के लिए अत्यन्त सुरीली आवाज में गाएँगी। उनके गानों में शैतान के वाद्य संगीत होंगे।"* **(तबरानी, बयात, पृ. 31–32)**

5.7 आने–जाने के साधन

(प) " शुफी इब्न माटी के अनुसार रसूलुल्लाह ने कहा–"निस्संदेह जन्नत के इनामों में से एक यह होगा कि जन्नत के लोग तेज़ गति से दौड़ने वाले जानवरों पर एक–दूसरे को मिलने जाएँगे। उनके लिए लगाम और जीन से लैस (सवारी के लिए तैयार) एक घोड़ा लाया जाएगा। यह घोड़ा न गोबर करेगा और न पेशाब। वे इस घोड़े पर सवारी करके जहाँ अल्लाह चाहेगा, वहाँ पहुँचेगा।" **(इब्न अबी दुनियाँ, बयात, पृ. 46)**

*(पप) "अब्दुर रहमान, जो घोड़ों का प्रेमी था, ने पैगम्बर से पूछा–क्या जन्नत में घोड़े होंगे ? उन्होंने उत्तर दिया–"यदि अल्लाह तुम्हें जन्नत में दाखिल कराता है तो तुम्हें मोती का बना एक घोड़ा मिलेगा जिसके दो पंख होंगे। यह घोड़ा भी तुम जहाँ जाना चाहोगे, ले जाएगा।"***(तबरानी, बयात, पृ. 8)**

5.8 मन पसन्द की पोशाक

"इब्न आबी दुनियाँ के अनुसार जन्नत में एक पेड़ है जिसके फल अनार के समान होंगे। जब कभी अल्लाह का कोई मित्र कपड़ों की इच्छा करेगा तो यह पेड़ अपने आप उसे सत्तर विभिन्न रंगों के कपड़ों के जोड़े भेंट करेगा। (उसके अपनी पसंद के कपड़े चुनने के बाद) वह पेड़ अपनी जगह पर वापिस चला जाएगा।" **(बयात, पृ. 7)**

5.9 खेती की सुविधा

"अबू हुरेरा के अनुसार रसूलुल्लाह जब बात कर रहे थे तो उनके पास एक ग्रामीण बैठा था। रसूलुल्लाह ने कहा कि जन्नत में एक व्यक्ति खेती करने के लिए अल्लाह की आज्ञा माँगेगा। अल्लाह इससे कहेगा क्या जो तुम चाहते हो तुम्हें नहीं मिला है ? वह जवाब देगा 'हाँ'। लेकिन मैं खेती करना पसंद करता हूँ। वह अपनी फ़सल बोएगा और एक क्षण में ही वह फ़सल बड़ी और काटने योग्य हो जाएगी। (काटने के बाद) वह फ़सल पहाड़ों के समान बड़ी होगी।" **(बयात, पृ. 9)**

6. जन्नत की हूरों का सौन्दर्य

6.1 जन्नत की स्त्रियाँ

इस्लाम के विद्वान मुफ्ती जुबैर बयात ने "मैडिन्स ऑफ पैराडाइज़" (जन्नत की हूरें) नामक अपनी पुस्तक, जिसे सभी मुसलमान मानते हैं, में लिखा है कि जन्नत में दो प्रकार की स्त्रियाँ होंगी। मानवीय स्त्रियाँ और हूरें। अल्लाह ''जन्नत के सौंदर्य की दृष्टि से सांसारिक स्त्रियों की दुबारा रचना करेगा।'' **(बयात, पृ. 11)**

जैसा कि कुरान **(56 : 35)** में सुस्पष्ट है–*"हमने उन्हें (एक नई) दृष्टि के रूप में बनाया और हमनें उन्हें कुमारी, प्रेयसी और बराबर की उम्र का बनाया"* तथा निम्नलिखित हदीस के अनुसार *"अल्लाह बूढ़ी औरतों को जवान बनाएगा और गैर-कुंवारियों को कुंवारी। चाहे वे इस दुनिया में कैसी भी दिखती हों, अल्लाह उन्हें जन्नत की सुंदरता के अनुरूप सब प्रकार से खूबसूरत और प्रियदर्शी बनाएगा।"* **(सफ़वात अत-तफ्सीर, 3/309;बयात, पृ. 11)**

"Allah will make old women into young women and non-virgins into virgins. No matter how their appearance was in this world, Allah will make them all beautiful and good looking in accordance to the beauty of Jannat." **(Safwat At-Tafasir 3/309-Darul Qalam, Beirut, Bayat p.11)**

मगर प्रश्न उठता है कि इस दुनियाँ की स्त्री को जन्नत में क्या मिलेगा ? इस विषय में बयात (**पृ.** 11-12) लिखता है–"मुफ्ती महमूद से पूछा गया कि यदि पुरुषों को जन्नत में हूरें मिलेंगी तो (इस दुनियाँ की) स्त्रियों को क्या मिलेगा ? उसने उत्तर दिया–*"ईमान वालों की स्त्रियाँ अपने पतियों के साथ रहेंगी। जिन स्त्रियों ने इस संसार में कभी शादी नहीं की उन्हें जन्नत में किसी अपने पसंद के कुँवारे पुरुष से शादी करने की छूट दी जाएगी। यदि वे उनमें से किसी को भी पसंद न करें तो उनके लिए (हूरों के समान) एक विशेष पुरुष की रचना की जाएगी और अल्लाह उन दोनों को शादी द्वारा मिला देगा।"* **(फतवा महमूदिया, 5/298)**

"Mufti Mahmud was asked that if men will receive hurs, what will women receive ? He replied that the wives of the believers will stay with their own husbands. Women who never married in this world will be given a choice to get married with any (unmarried) man they wish. If they do not like any of them, a special man will be

created for them (similar to the hurs) and Allah will join both of them in marriage." ***(Fatawa Mahmudiya 5/298)***

अल्लामा ऐलुसी भी अपनी तफ्सीर में कहता है कि "किसी पुरुष की इस दुनियाँ की पत्नी जन्नत में भी उसकी पत्नो रहेगी।" **(रुहूल मानी, 25/136; दार इलहया एत-तौराथ, अल-अराबी, बैरुत, बयात, पृ. 12)**

षससंउं ।सनेप ंसेव उमदजपवदे पद ीपे जंॅपित जींज ं चमतेवदश्े ूपमि पद जीपे ूवतसक ूपसस तमउंपद ीपे ूपमि पद जीम भ्मतमंॅजिमतण्ष **(त्नीनस डंश्दप 25ध136ए कंत प्सीलं ।ज.ंूतंजी ।स.।तंइपए ठमपतनजए ठंलंजए चण 12)**

6.2 सांसारिक स्त्री और हूर में कौन बेहतर ?

एक हदीस में उम्मी सलामा ने रसूलुल्लाह से पूछा कि हूरों और सांसारिक स्त्रियों में से कौन बेहतर है ? उन्होंने उत्तर दिया—इस संसार की स्त्रियाँ हूरों से बेहतर होंगी जैसाकि किसी पोशाक में अंदर के अस्तर की अपेक्षा बाहरी मगजी (लाइनिंग) ज्यादा उत्तम होती है क्योंकि सांसारिक स्त्रियों ने सलाह (नमाज), रोज़ा और अल्लाह की पूजा व इबादत की है। अल्लाह उनके चेहरों पर नूर (रोशनी) और बदन पर रेशमी पोशाक डालेगा (मानवीय स्त्रियाँ) रंग-रूप में उज्जवल होंगी और हरे रंग की पोशाक और पीली ज्वैलरी पहनेंगी।" आदि **(तबरानी, बयात, पृ. 12)**

Umme Salama narrates that she said to Rasulullah, "O Rasulullah ! are the women of this world superior or the hurs ?" He replied, "The women of this world will have superiority over the hurs just as the outer lining of garment has superiority over the inner lining." Umme Salama" then asked, "O Rasulullah ! what is the reason for this ?" He answered, "Because they performed salah, fasted, and worshipped (Allah). Allah will put light on their faces and silk on their bodies. (The human women) will be fair in complexion and will wear green clothing and yellow jewelry." **(Tabrani, Bayat, p. 12)**

"दूसरी प्रकार की स्त्रियाँ स्वर्ग की होंगी जो हूरे-आयन कहलाएँगी और जिनकी रचना जन्नत में आने वाले पुरुषों के लिए विशेषकर की गई है। हूर एक अति सुंदरी, गोरे रंग की और अत्यन्त काली आँखों वाली युवती होती है"........."अल्लाह इस संसार की स्त्रियों को हूरों से अधिक सुंदर और आकर्षक बनाएगा।" (**बयात, पृं. 13**)

"The second type of women will be those celestial women specially created for the people of Jannat known as the hur a'yn. A Hur is a young, beautiful, fair skinned woman with intensely dark eyes. Another interpretation is that there will be a sharp contrast between the whiteness and darkness of her eyes which is considered to be very beautiful.

Or it could also mean that her beauty will dumbfound and astonish others. The meaning of a'yn is a woman with big, attractive eyes, which is also considered a sign of beauty." **(Hadiyul Arwah 259-Darul Kutub At rabi, Beirut)**

"Allah will make the women of this world more beautiful and attractive than the hurs" **(Bayat, p. 13)**

यदि ऐसा ही है तो जिहादी और फिदायीन युवक जन्नत में हूरे पाने के लिए गैर–मुसलमानों की हत्या एवं रक्तपात क्यों करते हैं ? यदि सांसारिक स्त्रियाँ हूरों से ज्यादा सुंदर हैं तो जिहादी लोग हूरों को पाने के लिए इतने लालायित क्यों रहते हैं ? शायद वे इस सत्य को नहीं जानते हैं, तथा मुल्ला लोग भी इस सच्चाई को उन्हें नहीं बताते हैं।

6.3 जन्नत की हूरों की सुंदरता

कुरान में हूरों के सौंदर्य का विस्तृत वर्णन किया गया है।, जैसे *"उनके लिए वहाँ पाक–साफ़ जोड़े होंगे"* (2 : 25) *"उनके पास निगाहें बचाने वाली, (लजीली) सुंदर आँखों वाली स्त्रियाँ होंगी ऐसी (निर्मल) मानो छिपे हुए अण्डे हैं"* अर्थात् वे अत्यंत सुंदर होंगी। *नवी सल्ला* ने बताया कि उनकी कोमलता एवं सुकुमारता उस झिल्ली जैसी होगी जो अण्डे के छिलके और उसके गूदे के बीच होती है। *"उनके पास निगाहें बचाए रखने वाली (लजीली) समायु स्त्रियाँ होगी"* **(38 : 52)**। *"और हमने बड़ी और सुंदर आँखों वाली परम रूपवती स्त्रियों से इनका विवाह कर दिया है"* **(52 : 20)**। *"इनमें निगाह बचाए रखने वाली (लज्जावती) स्त्रियाँ हैं जिन्हें उनसे पहले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया है, और न किसी जिन्न ने, मानो (सुंदरता में) वे लाल माणिक्य और प्रवाल हैं"*। *"इनमें भली और सुंदर स्त्रियाँ हैं जिन्हें इनसे पहले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया है, न जिन्न ने। वे हरी–हरी मसनदों और अच्छे–अच्छे कालीनों पर टेक लगाए हुए हैं"* **(55 : 56–76)**। *"बड़ी और सुंदर आँखें वाली (मृग नैनी) परम रूपवती स्त्रियाँ जैसे छिपे हुए मोती...हमने उन्हें कुमारी बनाया है, प्रेयसी और समायु"* **(56 : 22–23; 36–37)** *"निस्संदेह डर रखने वाले के लिए सफलता बाग हैं और अंगूर और नवयुवतियाँ समान आयु वाली और छलकता मद्य पात्र"* **(78 : 31–34)**। *"और हम उनका विवाह बड़ी और सुंदर आँखों वाली परम रूपवती स्त्रियों से कर देंगे।"* **(44 : 54)**

परंतु हदीसों में हूरों की सुंदरता का वर्णन बहुत बढ़ा–चढ़ाकर किया गया है, जैसे–

(प) *"अल्लाह ने हूर और रुबी, (लाल मोती) में तुलना पारदर्शिता की दृष्टि से की है। जिस प्रकार कोई व्यक्ति लाल मणिक के आरपार देख सकता है, उसी प्रकार वह हूरों के शरीर और त्वचा की स्वच्छता और कोमलता के कारण उसके आरपार देख सकता है। इसी प्रकार हूरी की छोटे–छोटे मोतियों से तुलना उनकी कोमलता, गोरेपन एवं प्रियदर्शिता के कारण की गई है।"* **(बयात, पृ. 16; सफवात अत तफ्सीर, 3/30)**

(पप) *"कतादाह के अनुसार ये सभी स्त्रियाँ बाहरी अपवित्रताओं जैसे मासिक धर्म, पेशाब, पाखाना, और थूक आदि से मुक्त होंगी। ये सभी आंतरिक दुर्गणों जैसे द्वेष, मिथ्याचार, अकारण शपथ लेना, दुष्चरित्रता आदि से भी दूर होंगी। इस प्रकार उनमें अपने पतियों के प्रति लेशमात्र भी अवज्ञाकारिता नहीं होगी।"* **(बयात, पृ. 15)**

(पपप) बयात (**पृ. 21**) पर लिखता है कि *"जन्नत के लोगों की स्त्रियों के स्तन पूर्ण विकसित (फुल ब्रेस्टिड) होंगे जो कि समान आयु की होंगी"* **(78 : 33)**। *"इन स्त्रियों के स्तन अनार की तरह गोल होंगे और वे कभी ढलकेंगे नहीं (उभरे ही रहेंगे) क्योंकि ये स्त्रियाँ कभी बूढ़ी नहीं होगी।"*

"And the people of Jannat will have full breasted women who will be equal in age" (**78 : 33**). The breasts of these women will be round like pomegranates and they will never sag down because these women will never become old." **(Bayat, p. 21)**

(*पअ*) इस विषय में अब्दुल्ला इब्न मसूद बतलाता है कि *"रसूलुल्लाह ने कहा–जन्नत में प्रत्येक व्यक्ति की हूरों में से दो पत्नियाँ होंगी। प्रत्येक पत्नी सत्तर तहों की पोशाक पहने होंगी और इसकी जानु की अस्थि इन कपड़ों में से देखी जा सकती है जैसे कि किसी सफेद गिलास में से लाल रंग का पेय देखा जा सकता है।"* **(बयात, पृ. 20, तबरानी)**

(*अ*) *"अबू सईद खुदरा ने बतलाया कि रसूलुल्लाह ने कहा "जन्नत में एक व्यक्ति उठने से पहले सत्तर गद्दों पर सत्तर वर्षों तक लेटे हुए आराम करेगा। तब एक हूरी उसके पास आकर और उसके कंधों पर थपथपाएगी। वह हूरी के गालों से अपना चेहरा एक साफ शीशे के समान (चेहरे की चमक और निर्मलता के कारण) देखेगा।"* **(अहमद अबू याला, बयात, पृ. 18)**

(*अप*) "सैयद अमर कहता है उसने रसूलुल्लाह को यह कहते सुना *"यदि जन्नत की कोई स्त्री (हूर) पृथ्वी की ओर देखेगी तो वह पृथ्वी को कस्तूरी की सुगन्ध से भर देगी और (उसकी सुंदरता) का प्रकाश चाँद और सूरज की रोशनी से भी अधिक होगा।"* **(तबरानी, बाजार, बयात, पृ. 17)**

(*अपप*) अनास बतलाता है कि रसूलुल्लाह ने कहा *"अल्लाह के मार्ग में एक सुबह या एक शाम लगाना इस दुनियाँ और जो कुछ उसके अंदर है, से बेहतर है। जन्नत में एक हाथ के बराबर जगह पाना भी इस दुनियाँ से ज्यादा अच्छा है। यदि जन्नत की एक हूर पृथ्वी की ओर झांक भी ले तो वह जन्नत और पृथ्वी के बीच की दूरी को कस्तूरी की सुगन्ध और प्रकाश से भर देगी। उसके सिर का रूमाल (पाना भी) इस दुनियाँ से बेहतर हैं"* **(तबारी, बयात, पृ. 17)**। यदि एक हूरी का रुमाल इतना महत्त्वपूर्ण है तो स्वयं हूरी कितनी मूल्यवान होगी !

(*अपपप*) अनवर शेख ने अपनी पुस्तक 'इस्लामिक जिहाद' (**पृ. 45-46**) में हदीस तिरमिघी (**खंड 2 : 35-40**) के आधार पर लिखा है कि :

(*प*) "हूर एक अत्यधिक सुंदर युवा स्त्री होती है जिसका शरीर पारदर्शी होता है। उसकी हड्डियों में बहने वाला द्रव्य इसी प्रकार दिखाई देता है जैसे रूबी और मोतियों के अंदर की रेखाएँ दिखती हैं। वह एक पारदर्शी सफेद गिलास में लाल शराब की भाँति दिखाई देती है।"

(*पप*) "उसका रंग सफेद है, और साधारण स्त्रियों की तरह शारीरिक कमियों जैसे मासिक धर्म, रजोनिवृत्ति, मल व मूत्र विसर्जन, गर्भधारण इत्यादि संबंधित विकारों से मुक्त होती है।"

(*पपप*) "वह एक ऐसी स्त्री है जो विनम्र होती है और कातिलाना दृष्टि रखती है; वह अपने पति के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष को कभी नहीं देखती तथा अपने पति की पत्नी होने के कारण कृतज्ञता का अनुभव करती है।"

(*पअ*) "प्रत्येक हूर एक ऐसी युवती स्त्री होती हैं जो अहंकार और द्वेष भाव से मुक्त होती है। इसके अतिरिक्त वह प्यार का अर्थ समझती है और उसे व्यवहार में लाने की योग्यता भी रखती है।"

(*अ*) "हूर एक ऐसी अमर स्त्री होती है जो कभी वृद्धा नहीं होती। वह विनम्रता से बोलती है और अपने पति के सम्मुख अपनी आवाज ऊँची नहीं उठाती; वह सदैव उससे सहमत रहती है। विलासिता में पली होने के कारण वह स्वयं विलासिता ही होती है।"

(*अप*) "प्रत्येक हूर किशोर वय की कन्या होती है। उसके उरोज उन्नत और बड़े होते हैं। हूरें भव्य परिसरों वाले महलों में रहती हैं।"

हूर के वृत्तांत के बारे में देखिए, कि मिश्कत खण्ड 3 के पृष्ठों (**83-97**) में क्या लिखा है–

(*अपप*) "हूर यदि जन्नत में अपने आवास से पृथ्वी की ओर देखे तो सारा मार्ग सुगंधित और प्रकाशित हो जाता है।"

(*अपपप*) "हूर का मुख दर्पण से भी अधिक चमकदार होता है, तथा उसके गाल में कोई भी प्रतिबिंब देख सकता है। उसकी हड्डियों का द्रव्य आँखों से दिखाई देता है।"

(*पग*) "प्रत्येक व्यक्ति जो जन्नत में जाता है उसको 72 हूरें दी जाएँगी। जब वह जन्नत में प्रवेश करता है, मरते समय उसकी उम्र कुछ भी हो, वहाँ तीस वर्ष का युवक हो जाएगा और उसकी आयु आगे नहीं बढ़ेगी।"

यह ध्यान देने योग्य बात है कि वे पुरुष जो इतने पौरुष वाले हैं, उनका झुकाव प्रेम-प्रसंग के अतिरिक्त और कहीं नहीं होगा। इसी कारण इस्लाम के अनुसार कामवासना की तृप्ति जीवन का अंतिम लक्ष्य है और इस प्रकार एक मुसलमान का दृष्टिकोण कामोपभोग-उन्मुखी हो जाता है।"

6.4 जन्नत में कितनी पत्नियाँ

कुरान में अल्लाह बार-बार भरोसा दिलाता है कि जन्नत में प्रवेश करने वाला कोई पुरुष कुंवारा नहीं रहेगा। हम उसकी उसके बराबर आयु की हूरों से शादी करा देंगे। (**44 : 54**)। परंतु वहाँ पत्नियों की संख्या स्पष्ट नहीं की गई है। मगर बहुवचन-हूरों शब्द से एक से अधिक पत्नियों का संकेत अवश्य है। लेकिन हदीसों में जन्नत में पत्नियों की संख्या दो से लेकर बहत्तर हज़ार तक कही गई है। परंतु इस्लाम के सभी विद्वान आमतौर पर बहत्तर पत्नियों की संख्या को अवश्य मानते हैं–

(*प*) पैगम्बर ने कहा, *"जन्नत में प्रत्येक पुरुष की दो पत्नियाँ होंगी और उनमें आपस में विरोध नहीं होगा और उनके दिलों में दुश्मनी नहीं होगी।"* **(मुस्लिम, खंड-4 : 6797, पृ. 1782)**

(*पप*)"अबू सईद बतलाता है कि रसूलुल्लाह ने कहा– *"जो भी व्यक्ति जन्नत के सबसे नीचे तल पर होगा उसके पास अस्सी हज़ार नौकर और बहत्तर पत्नियाँ होंगी। उसके रहने के लिए माणिक, मूंगा और रुबियों से बना महल तैयार किया जाएगा (जिसकी लम्बाई और चौड़ाई) उतनी होगी जितनी कि अलजाविया (सीरिया) से साना (यमन) की दूरी (लगभग 2150 किमी.) है।"* **(बयात, पृ. 37-38; तिरमिर्धी, इब्न हिब्बन)**

Abu Said narrates that Rasulullah said, "The person who will be in the lowest level of Jannat will have 80,000 servants and 72 wives. A palace made of pearls, emeralds, and rubies will be raised for him [whose length and width) will be the distance between Al-Jabiyah (a city in Syria) and Sana (a city in Yemen"

The distance between these two cities is approximately, 2150 kilometers. Thus, we can imagine how great and big this palace will be! **(Tirmidhi, Ibn Hibban, Bayat, pp. 37-38)**

(*पपप*)"अबूहुरेरा बतलाता है कि रसूलुल्लाह ने कहा–जन्नत में एक पुरुष को इस संसार की पत्नियों के अलावा बहत्तर हूरें भी उसकी पत्नियाँ होंगी और उनमें से एक की चौड़ाई एक मील होगी।" **(अहमद अबू याला, बयात, पृ. 36-37)**

Abu Hurayrah narrates that Rasulullah said : "The person of Jannat will also have 72 wives from the hurs besides his wives from the world, and one of them will have the width of one mile." **(Ahmed, Abu Ya'la, Bayat, pp. 36-37)**

Bayat explains that the inhabitants of Jannat will be enlarged in size in order to gain maximum pleasure from the luxuries of Jannat. This hadith also proves that one's wife in this world will remain his wife in the hereafter.

(*पअ*)"अब्दुर रहमान बिन साबित ने कहा–*"निश्चय ही जन्नत में एक पुरुष पाँच सौ हूरों, चार हजार क्वारियों और आठ हजार पहले से विवाहित स्त्रियों से विवाह करेगा। वह उनमें से प्रत्येक के साथ सहवास करेगा जब तक कि वह इस दुनियाँ में जीवित रहेगा।"* **(बेहाकी, बयात, पृ. 37)**

"Abdur Rahman bin Sabit said, "Definitely, a person in Jannat will marry 500 hurs, 4,000 virgins, and 8,000 previously married women. He will have sexual intercourse with each one for as long as he lived in this world." **(Bayhaqi, Bayat, p. 37)**

(*अ*)"मुल्ला अलीकारी के अनुसार बहत्तर पत्नियों की सर्वोत्तम व्याख्या तो यह होगी कि दो पत्नियाँ इस संसार की और सत्तर जन्नत की हूरों में से है" **(मिश्कत, 9/600; बयात, पृ. 38)**

"Mulla Ali Qari says that the best interpretation is that the two wives mentionedin this hadith refer to the women of this world and each person will have a minimum of 72 wives; 70 from the hurs and 2 from the humans".**(Mishqat, 9/600, Bayat, p. 38)**

आश्चर्य है कि इस संसार की वैधानिक चार पत्नियों में से केवल दो ही जन्नत में जा सकेंगी। इन दो के चुनाव का आधार क्या होगा ? शेष पत्नियों को क्यों छोड़ दिया गया ?

(*अप*) पैगम्बर ने कहा, "जो उस लड़ाई में चालीस दिन या चालीस रात के लिए भाग लेगा उसे जन्नत में एक लाल माणिक्यों और मोतियों से जड़ित सोने का खम्बा दिया जाएगा और वह एक ऐसे महल में रहने का आनंद ले सकेगा जिसके बहत्तर हज़ार दरवाज़े होंगे और प्रत्येक दरवाज़े पर पत्नी के रूप में एक हूरी होगी" **(माजाह खंड-4 : 2780, पृ. 148)**

(*अपप*) *"इमाम राजी कहता है कि अल्लाह, एक ईमान वाले को प्रत्येक नेक काम करने के बदले में जो वह करता है, जितनी पत्नियाँ चाहेगा, उतनी देगा।"* **(तफ्सीर राजी, 15/168; बयात, पृ. 40)**

(*अपपप*) अन्त में बयात लिखता है–*"प्रत्येक ईमान वाले को मिलने वाली पत्नियों की संख्या व्यक्ति के अल्लाह के प्रति आज्ञाकारिता पर निर्भर करेगा।"* (**पृ. 40**) यानी पत्नियों की संख्या अल्लाह की मरजी पर है।

"Imam Razi mentions that Allah will give a believer as many wives as Allah desires for every good deed that the believer does. The exact number of wives for each person will vary according to a person's obedience to Allah and his level in Jannat. Thus, we should try to do as many good deeds in this world in order to enter Jannat and thereafter gain as many wives as possible." **(Tafsir Razi, 15/168-Darul Fikr, Beirut; Bayat, p. 40)**

7. जन्नत में सैक्स के प्रलोभन

7.1 जन्नत का सैक्स जीवन

जन्नत में मरणोत्तर सैक्स का प्रलोभन एवं व्यवस्था इस्लाम की अपनी एक विशेषता है। अल्लाह ने कुरान में **(56 : 37)** हूरों को 'कुंवारी', 'समायु' और 'प्रेम करने वाली' ही कहा है। मगर हदीसों में 'ईमान वालो' के मरणोत्तर सैक्स जीवन के प्रलोभनों एवं भोग-विलासों का विस्तार से वर्णन किया गया है; जैसे–

(*प*) *"अबू हुरेरा बतलाता है कि रसूलुल्लाह से पूछा गया कि "क्या हम जन्नत में संभोग कर सकेंगे ? उन्होंने उत्तर दिया; मैं उसकी शपथ खाकर कहता हूँ जिसके हाथ में मेरा जीवन है, 'हाँ' (यानी यौन संबंध होंगे)। कठोर प्रहारों (हार्ड पुशिज़) सहित। जब हममें से कोई भी अपनी पत्नी से संभोग क्रिया पूरी कर लेगा तो वह फिर से पवित्र और कुंवारी स्त्री हो जाएगी।"* **(इब्नन हिब्बन, बयात, पृ. 43)**

Abu Hurayrah narrates that Rasulullah was asked, "Will we have sexual intercourse in Jannat ?" He answered, "By the oath of that Being in whose hands my life is, yes (sexual intercourse will be) with hard pushes. When one of us completes the task of intercourse with his wife, she will once again become a virgin and a pure woman." **(Ibn Hibban, Bayat, p. 43)**

(*पप*)अबू हुरेरा बतलाता है कि रसूलुल्लाह से पूछा गया कि "क्या हम जन्नत में अपनी पत्नियों के साथ संभोग कर सकेंगे ? उन्होंने उत्तर दिया "एक पुरुष एक सुबह में एक सौ कुंवारियों के साथ संभोग कर सकेगा" **(अबू याला, वे हयाकी, तबरानी, बाजार; बयात, पृ. 42)**

"Abu Hrayrah narrates that Rasulullah was asked, "Will we have sexual intercourse with our wives in Jannat ?" He answered, "A person will have sexual intercourse with 100 virgins in one morning."**(Abu Ya'la, Bayhaqi, Tabrani, Bazzar; Bayat, p. 42)**

विद्वान लेखक बयात 'केवल कुंवारियों के साथ सैक्सुअल संभोग', विषय की समीक्षा करते हुए लिखता है–'कुरान (55 : 56) में अल्लाह कहता है *"इन (जन्नत) में निगाह बचाए रखने वाली (लजीली) स्त्रियाँ हैं जिन्हें इनसे पहले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया है और न किसी जिन्न ने।"*

"जन्नत में इन स्त्रियों का कुंवारी होने का कारण यह है क्योंकि सामान्यतया एक मनुष्य इनसे संभोग करने में अधिक आनंद अनुभव करता है। जैसाकि ऊपर कहा गया है कि अल्लाह जन्नत में सभी मानवीय स्त्रियों को भी कुंवारी बनाएगा। इमाम राजी ने भी उपरोक्त आयत की व्याख्या में कहा है कि अल्लाह अप्रत्यक्ष रूप से सांसारिक सैक्सुअल संभोग की बात कहता है। परंतु इस आयत में उसने जन्नत में सैक्सुअल संभोग का प्रत्यक्ष और सुस्पष्ट शब्दों में उल्लेख किया है। इसका उद्देश्य यही दिखलाने का है कि इस जगत में सैक्सुअल संभोग प्रक्रिया दोषों से मुक्त नहीं है, और न परिपूर्ण है। जबकि जन्नत में सैक्सुअल संभोग प्रक्रिया परिपूर्ण और सभी प्रकार के दोषों से मुक्त होगी।" **(तफ्सीर राजी, 15/130; बयात, पृ. 41-42)**

"While commenting on sexual intercourse only with virgins Bayat writes : Allah says, "No human or Jinn has touched (these women) before. Then which bounty of your Lord will you both (humans and Jinns) deny ? **(55 : 55-56).**

"The reason for these women being virgins is because a person generally derivies more pleasure in having sexual intercourse with them. As mentioned above, Allah will also make all the human women into virgins in Jannat. Imam Razi also says in the commentary of this verse that Allah mentions sexual intercourse of the world with indirect words. However, in this verse He has mentioned the sexual intercourse of the world hereafter in clear and direct words. The objective of this is to show that sexual intercourse in this world is not free of faults and is not perfect, whereas sexual intercourse in the hereafter will be perfect and free of all faults."
(Tafsir Razi, 15/130; Bayat, pp. 41-42)

(*पपप*)"जायद बिन अरकाम बतलाता है कि एक यहूदी रसूलुल्लाह के पास आया और कहा *'ओ अबुल कासिम ! तुम दावा करते हो कि जन्नत के लोग खाएँगे और पिएँगे।"* इस पर रसूलुल्लाह ने कहा–*"शपथ उसकी जिसके हाथ में मेरा जीवन है, जन्नत में प्रत्येक व्यक्ति को एक सौ पुरुषों के बराबर खाने, पीने और संभोग करने (सैक्सुअल इंटरकोर्स करने) की शक्ति दी जाएगी"* **(तिरमिधी अहमद, बाजार, नासाई, बयात, पृ. 48)**। इसकी पुष्टि में बयात कहता है–*"क्योंकि जन्नत में एक पुरुष की अनेक पत्नियाँ होंगी, इसलिए अल्लाह जन्नत में पुरुषों की संभोग शक्ति बढ़ा देगा ताकि वे उनकी (हूरों की) वासनाओं की पूरी तरह संतुष्टि कर सके"*। **(पृ. 48)**

"Zayd bin Arqam reports that a Jew came to Rasulullah and said, "O Abul Qasim you claim that the people of Jannat will eat and drink." Rasulullah said, "By the oath of that being in whose hands may life is, every person in Jannat will be given the power of 100 men in eating, drinking, and sexual intercourse." **(Trimidhi, Ahmad, Bazzar, Nasai, Bayat, p. 48)**

(*पअ*)अनास ने बतलाया है कि *"पवित्र पैगम्बर ने कहा–एक ईमानवाले को जन्नत में संभोग करने के लिए अमुक-अमुक शक्तियाँ दी जाएँगी। इस पर पूछा गया–ओ अल्लाह के पैगम्बर! क्या वह ऐसा*

कर सकता है ? उन्होंने उत्तर दिया–"उसको एक सौ पुरुषों के बराबर शक्ति दी जाएगी।" **(तिरमिधी, मिश्कत, खंड-4 : 42 : 24, पृ. 168)**

Anas reported that the Holy Prophet said, "the believer will be given such and such strength in paradise for sexual intercourse. It was questioned. O prophet of Allah ! Can he do that. He said : He will be given strength of one hundred persons." **(Mishkat : Vol 4 : 42 : 24 : p. 168)**

शायद इसी प्रकार की हदीसों के आधार पर मौलाना बुखारी पैगम्बर मुहम्मद के बारे में लिखता है–

(अ)'अनास बतलाता है कि *"पैगम्बर प्रति रात अपनी सभी पत्नियों के पास जाते थे (सैक्स संबंध करते थे) और तब उनकी नौ पत्नियाँ थी।"*

(बुखारी, खंड-7 : 6 पृ. 5 : 142, पृ. 106)

Narrated Anas : The prophet used to go round (have sexual relation with) all his wives in one night and he had nine wives." **(Bukhari, Vol. 7 : 6, p. 5; 142, p. 106)**

(अप) आयशा (पैगम्बर की पत्नी) ने कहा, "मैंने अल्लाह के देवदूत को इत्र लगाया और वे अपनी सभी पत्नियों के पास गए (सैक्स संबंध किया), और प्रातःकाल वे एक मुहरिम (स्नान के बाद) थे।" **(बुखारी खंड-1 : 268, तथा 270 पृ. 165-166)**

"Aisha said, "Iscented Allah's Messenger and he went round (had sexual relation with) all his wives, and in the morning he was a Muhram (after taking bath)"! **(Bukhari Vol. 1 : 268, 270, pp. 165-166)** (note-all brackets are in original translation)

परंतु पैगम्बर मुहम्मद के विषय में ऐसी हदीसों पर कौन विश्वास करेगा?

(अपप) "हायथाम अतताई और सलीम बिन अमिर बतलाते हैं कि रसुलुल्लाह से जन्नत में संभोग (सैक्सुअलइंटर टरकोर्स) के बारे में पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया–"यह एक प्रबल इच्छाशक्ति और न थकने वाले लिङ्ग के साथ होगा। निश्चय ही एक पुरुष एक स्त्री के साथ चालीस वर्षों तक संभोग करेगा। (इस समय के दरम्यान) वह न उसके पास से दूर होगा और न वह थकेगा ही। वह तब तक संभोग करता रहेगा जब तक उसकी आत्मा इच्छा करेगी और उसकी आँखें उसमें सुख पाएँगी।" **(हरिथ बिन अली उस्माह, इब्न अबी हातिम; बयात, पृ. 45)**

"Haytham At-tai and Salim bin Amir relate that Rasulullah was asked regarding sexual intercourse in Jannat. He said, "It will be with a powerful desire and penis which does not tire. Definitely, a person will have sex with a woman for 40 years. (During this time) he will not move away and nor will he tire. He will have sexual intercourse as much as his soul will desire and his eyes will find pleasure in." **(Harith bin Abi Usamah, Ibn Abi Hatim, Bayat, p. 45)**

(अपपप) "मुहम्मद इब्न काब अल कुराजी बतलाता है कि रसूलुल्लाह ने कहा–मैं उसकी शपथ खाकर कहता हूँ जिसने कि मुझे सत्य के साथ भेजा है कि तुम जन्नत के लोगों की अपेक्षा अपनी पत्नियों और (अपने) भवनों से ज़्यादा परिचित नहीं हो। जन्नत का एक पुरुष दो सांसारिक पत्नियों और उन बहत्तर पत्नियों (हूरों) के पास आएगा जिन्हें अल्लाह ने उनके लिए विशेष रूप से जन्नत में बनाया है। हूरों

की अपेक्षा मानवीय पत्नियों की विशेषता होगी क्योंकि उन्होंने संसार में अल्लाह की पूजा की है। पहले वह अपनी (दुनियायी)। पत्नियों के पास लाल माणिक्यों से बने कमरे में आएगा तथा (वे) सोने के बने बिस्तर पर जाएँगे जो कि मोतियों से सुसज्जित है। यह बिस्तर सत्तर प्रकार के रेशमी वस्त्रों से सजा हुआ होगा। वह अपना हाथ अपनी पत्नी के दोनों कंधों के बीच रखेगा और वह अपना हाथ उसके कपड़ों, बदन और त्वचा के बीच ले जाएगा। वह उसकी टाँगों की माँसपेशियों को देखेगा जैसे कि कोई व्यक्ति लाल मोती के बीच धागे को देख सकता है। इसका मन पत्नी के ख्यालों में डूबा होगा और पत्नी का मन भी अपने पुरुष में तल्लीन होगा। वह पुरुष इस अवस्था में रहेगा तथा वह उस स्त्री से नहीं ऊबेगा और न स्त्री ही उससे ऊबेगी। प्रत्येक बार जब भी वह उसके संसर्ग में आएगा, वह उसे कुँवारी ही पाएगा। उसका लिङ्ग थकेगा नहीं और स्त्री का सेक्सुअल अंग (यौनि भाग) भी कोई कठिनाई नहीं अनुभव करेगा। (जब वे इस स्थिति में होंगे) तब कोई घोषणा करेगा कि "हमें पता चला गया है कि तुम उससे नहीं ऊबोगे और न तुम उसको उबाओगे। स्त्री और पुरुष दोनों में से कोई भी शुक्राणुओं के स्खलन (निकास) का अनुभव नहीं करेंगे। तुम्हारे पास उस पत्नी के अलावा तुम्हारी अन्य पत्नियाँ भी होंगी। वह एक-एक करके अन्य पत्नियों के साथ संभोग करेगा। जब कभी भी वह किसी अन्य पत्नी के पास जाएगा, तो वह उससे कहेगी, मैं अल्लाह की सौगंध खाकर कहती हूँ कि जन्नत में मुझे तुमसे ज़्यादा प्यारा अन्य कोई नहीं है" **(अबूयाला, बयात, पृ. 44)**

"Muhammed ibn Ka'b Al-Qurazi narrates from a person of the Ansar (people of Madinah) that Rasululah said, "I take the oath of that Being who sent me with the truth, you are not more acquainted with your wives and houses than the people of Jannat. A person of Jannat will come to 72 wives which Allah specially created in Jannat (hurs) and 2 human wives. The human wives will have virtue over the (hurs) because they worshipped Allah in the world. He will come to the first of his wives in a room made of rubies. (They will be on a) bed made of gold which is adorned with pearls. This bed will be made of 70 different types of silk. He will place his hand betwee her two shoulders and he will see his hand through her clothes, skin, and flesh. He will see the marrow of her leg just as a person can see the thread inside a ruby. His inside will be a reflection of her and her inside will be a reflection of him. He will be in this condition; he will not become bored of her and she will not become bored of him. Every time he comes to her, he will find her to be a virgin. His sexual organ will not tire and her sexual organ will also not experience any difficulty. While he is in this condition, someone will announce, 'We have known that you will not get bored and you will not make her bored. Both the man and woman will not experience ejaculation of sperm. You will have other wives besides her. He will go to the other wives one by one. Whenever he will go to a wife, she will say to him, "I swear by Allah, there is nothing in Jannat more beloved to me than you." **(Abu Ya'la, Bayat, p. 44)**

(*घग*) इन हूरों के अलावा एक ईमान वाले के लिए जन्नत में बाजारू स्त्रियों का भी प्रबंध है। "अली ने बतलाया कि अल्लाह के देवदूत ने कहा–*"जन्नत में एक बाजार है जहाँ कोई बिक्री और खरीददारी नहीं होती है, केवल स्त्रियाँ और पुरुष होते हैं। जब कोई पुरुष किसी सुंदरी को चाहेगा तो वह उसके साथ संभोग कर सकेगा"* **(तिरमिधी, मिश्कत खंड-4 : 34 पृ. 171)**

"Ali reported that the Apsotle of Allah said : There is in Paradise a market wherein there will be no buy and sale, but figure, of men and women. When a man will desire a beauty, he will have intercourse with her." **(Tirmizi, Mishkat Vol. 4 : 34 : p. 171)**

जन्नत के भोग विलास के इतने प्रलोभनों को सुनकर और विश्वास करके यदि कोई पुरुष जिहाद या फिदायीन हमलों के लिए तैयार हो जाता है तो इसमें आश्चर्य भी क्यों ? जिहाद के नाम पर मरणोत्तर जीवन में अगणित युवा सुंदरियों के साथ भरपूर सैक्स की गारंटी इस्लाम की अपनी विशेषता है !

7.2 जन्नत में किशोर लौंडे (गिलमान)

अल्लाह ने जन्नत में भोगविलास के लिए कुँवारी सुंदरियाँ ही नहीं दी हैं बल्कि सुंदर किशोर भी दिए हैं जो सुंदर हैं, आकर्षक हैं, रेशमी वस्त्रों एवं हीरा मोती और मणियों से अलंकृत भी हैं। जैसे–"उनके पास किशोर होंगे जो सदैव किशोरावस्था में ही रहेंगे, प्याले और आफतावे (जग) और विशुद्ध पेय से भरा हुआ पात्र लिए फिर रहे होंगे" **(56 : 17-19)**

(पप)"उनकी सेवा में ऐसे किशोर दौड़ते फिर रहे होंगे जो सदैव किशोर हो रहेंगे। तब तुम उन्हें देखोगे तो उन्हें समझोगे कि बिखरे हुए मोती हैं **(76 : 19-20)**। उपरोक्त आयतों की समीक्षा करते हुए अनवर शेख अपनी पुस्तक *"इस्लाम : कामवासना और हिंसा"* में लिखता है:

"यह भी स्मरण रहे कि इस्लाम इस तथ्य को नहीं भूलता कि विषम लैंगिकता दैहिक तुष्टि का पूर्ण स्रोत नहीं है क्योंकि कुछ व्यक्तियों की रूचियाँ भिन्न होती हैं। इसलिए यह जन्नत के सुख को एक सन्न करने वाला आयाम देता है। कुरआन कहता है–

"वे वहाँ आपस में प्याले छीन-झपट रहे हैं, उसमें न बेहूदगी है और न कोई गुनाह की बात और उनके पास उनके (सेवक) लड़के आ-जा रहे हैं, वे ऐसे (सुंदर) हैं जैसे धराऊ मोती।" **(52 : 23–24)**

"इससे यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि सर्वाधिक सुंदरियों के अतिरिक्त जन्नत में लड़के भी हैं जो कि–(1) मोतियों के समान सुंदर हैं, (2) सदैव युवा हैं क्योंकि उनकी आयु नहीं बढ़ती, (3) रेशम के कपड़े पहनते हैं, और (4) चाँदी के आभूषण पहने होते हैं।

जन्नत में रहने वाले इन असाधारण आकर्षक युवकों का क्या प्रयोजन है ? जन्नत इस प्रकार बनाया गया है कि हर एक सोने की ईंट के पश्चात् चाँदी की ईंट होती है ; और गारे या सीमेंट के स्थान पर केसर द्वारा उन्हें जोड़ा गया है और यहाँ के पत्थर भी हीरे और जवाहरात के हैं। जो कोई जन्नत में जाएगा, दुःख से मुक्त होगा; वहाँ सदैव रहेगा, सदैव युवा रहेगा, कभी मरेगा भी नहीं।

इस घोर विलासिता के वातावरण में इन मादक युवकों के वहाँ होने का कोई असाधारण उद्देश्य होगा ही, यद्यपि मुस्लिम विद्वान दावा करते हैं कि वे साधारण सेवादार हैं जो भाग्यशाली मुसलमानों की सेवाएँ करते हैं।"

(पृ. 70-71)

उन्होंने आगे लिखा चूंकि *"जिहाद जन्नत प्राप्ति का पक्का साधन है वह जन्नत, जो मृत्युपरान्त मनचाहे यौन-सुख का निवास है। अतः कामवासना (सैक्स) और हिंसा संयुक्त रूप से इस्लाम के आधारभूत माध्यम हैं। जिनके द्वारा पुरूष को मुक्ति के जाल में फँसाया जाता है। यह पुरूष के स्वाभाविक भय और अनिश्चितता की भावना का सर्वाधिक प्रभावी शोषण है।"* **(पृ. 84)**

---

8. क्या शहीद को विशेषाधिकार प्राप्त है ?

8.1 शहादत के लिए प्रलोभन

इस्लाम में मुसलमानों को गैर-मुसलमानों के विरूद्ध अन्तहीन 'जिहाद' करते रहने के लिए एक अत्यन्त आकर्षक प्रलोभन दिया गया है। कुरान और हदीसों में बार-बार कहा गया है कि यदि वे 'अल्लाह के मार्ग में' युद्ध करते हुए मारे गए तो वे शहीद कहलाएँगे और वे निश्चय ही जन्नत में दाखिल कर दिए जाएँगे। हदीसें कहती हैं–

(प) *"अल्लाह के देवदूत ने कहा कि–जो कोई (अल्लाह के मार्ग में) कत्ल कर दिया गया है, वह शहीद है और वह जन्नत में प्रवेश करेगा।"* **(मुस्लिम, खंड. 3 : 4660, पृ. 1263 ; दाऊद, खंड. 2 : 2493; पृ. 691; माजाह, खंड. 4 : 2804 ; पृ. 163)**

(पप) *"अल्लाह गारंटी देता है कि (जो उसके उद्देश्य के लिए 'जिहाद' करता है और उसे अल्लाह के लिए जिहाद के अलावा किसी अन्य कार्य के लिए निकलने को विवश नहीं किया जाता है) वह उसे (शहीद को) जन्नत में प्रवेश कराएगा अथवा उसे पुरस्कार अथवा लूट के माल सहित, जो उसने अर्जित की है, उसके घर लौटाएगा जहाँ से वह (जिहाद के लिए) निकला था।"* **(बुखारी, खंड. 9 : 555, पृ. 417)**

(पपप) "एक ईमान वाले ने पैगम्बर से पूछा–*"क्या आप मानते हो कि यदि मैं 'अल्लाह के मार्ग में' मारा गया तो सब पापों से मुक्त हो जाऊँगा ? पैगम्बर ने कहा–'हाँ', शहीद के सब पाप, उस पर कर्ज के अलावा, माफ़ कर दिए जाएँगे।"* **(मुस्लिम, खंड. 3 : 4646, 4649, 4650 पृ. 1260-61)**

(*पअ*) अल्लाह के देवदूत ने कहा–*"किसी ने 'मन से' निष्ठापूर्वक शहादत माँगी तो अल्लाह उसे शहीदों की श्रेणी में रखेगा भले ही वह अपने बिस्तर पर ही क्यों न मर गया हो।"* **(मुस्लिम, खंड. 3 : 4695, पृ. 1272 ; माजाह, खंड. 4 : 2797 पृ. 158)**

कुरान और हदीसों की अन्य सैंकड़ों आयतों में शहादत की विशेषताएँ और इसके लिए पुरस्कारों के प्रलोभन दिए गए हैं जो कि एक सच्चे, विश्वासी, सत्कर्मी मुसलमान को मिलने वाले पुरस्कारों से कहीं अधिक हैं। वास्तव में, इस्लाम के प्रचार-प्रसार में शहादत द्वारा जन्नत के आकर्षणों ने बहुत बड़ा योगदान दिया है।

8.2 शहीद के विशेषाधिकार

हदीसों में एक शहीद को जन्नत की गारंटी के अलावा, अन्य अनेक विशेषाधिकार भी दिए गए हैं। जैसे–

(*प*) "मिकदाम ब. माद ब. कारिब बतलाता है कि अल्लाह के दूत ने कहा–"एक शहीद को अल्लाह की तरफ से छह विशेषाधिकार प्राप्त हैं–1. अल्लाह सबसे पहले उसे (गैर-मुसलमान) के खून बहाने पर माफ़ कर देता है ; 2. उसे जन्नत में उसका निवास दिखाया जाता है ; 3. उसे कबर की यातना से मुक्त किया जाता है ; 4. उसे विश्वास (ईमान) की पोशाक पहनाई जाती है ; 5. उसकी (जन्नत की) बेहतर सुंदर काली आँखों वाली कुँवारी युवतियों (हूरों) से शादी करा दी जाएगी और ; 6. उसकी अपने सत्तर सगे-संबंधियों की (जन्नत के लिए) मध्यस्थता या सिफ़ारिश स्वीकार कर ली जाएगी।" **(माजाह, खंड. 4 : 2799 पृ. 159 ; मिश्कत, खंड. 2 : 44 ; पृ. 352)**

(*पप*) इसी प्रकार अबू-अल-दरदा ने बतलाया कि अल्लाह के देवदूत ने कहा–*"एक शहीद की अपने परिवार के सत्तर लोगों को (जन्नत) के लिए सिफ़ारिश स्वीकार कर ली जाएगी।"* **(दाऊद, खंड. 2 : 2516, पृ. 699)**

इस्लाम के मुल्ला, मौलवी और कट्टरपंथी मुसलमान उपरोक्त हदीसों का यह अर्थ लगाते हैं कि शहीद को एक सच्चे मुसलमान की तरह कि़यामत तक कबर में रहकर अपने कर्मों के न्याय के लिए प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी बल्कि शहीद को शहादत के फौरन बाद ही जन्नत मिल जाएगी। यह सही नहीं है कि क्योंकि हदीस में शहीद को उसका आवास केवल *दिखाया गया है, उसे दिया नहीं गया है।* उपरोक्त छह विशेषाधिकारों में से हम यहाँ आगे केवल दो की ही समीक्षा करेंगे।

8.3 क्या शहीद किसी की जन्नत के लिए सिफ़ारिश कर सकता है?

कुरान के अनुसार, अल्लाह ने न्याय के दिन किसी को भी, किसी प्रकार की सिफ़ारिश करने का कोई अधिकार नहीं दे रखा है। सभी अधिकार उसके ही पास हैं। जैसे–

(*प*) *"वह (अल्लाह) न्याय दिलाने वाले दिन का स्वामी है।"* **(1 : 4)**

(*पप*) *"अल्लाह से हटकर कोई भी नहीं जो उसका समर्थक और सिफ़ारिश करने वाला हो सके।"* **(6 : 70)**

(पपप) *"सिफ़ारिश तो सारी की सारी अल्लाह के अधिकार में है।"* **(39 : 44)**

(पअ) *"सिफ़ारिश करने वालों की कोई सिफ़ारिश उनको कुछ लाभ न पहुँचा सकेगी।"* **(74 : 48)**

(अ) *"अल्लाह के अलावा तुम्हारा न कोई संरक्षक मित्र है, और न उसके मुकाबले में कोई सिफ़ारिश करने वाला।"* **(32 : 4)** यही बात आयत **(6 : 51 ; 26 : 100 ; 30: 13)** आदि में कही गई है।

हदीस (**सैखल खंड,** 1 : 2/7) में पैगम्बर साहब कहते हैं– *"न्याय के दिन अल्लाह के सामने कुरान से बड़ा अधिकार किसी सिफ़ारिश करने वाले का नहीं होगा, न किसी पैगम्बर का और न किसी फरिश्ते का।"* **(मोरे, पृ. 563)**

उपरोक्त आयतों से सुस्पष्ट है कि न्याय के दिन अल्लाह मुसलमानों के जीवन भर के कर्मो का फैसला पूर्णतया उनके कर्मानुसार स्वंय करेगा। **(36 : 12)**। उसमें किसी की सिफ़ारिश नहीं चलेगी और तब वहाँ न कोई सिफ़ारिशी होगा, न कोई सिफ़ारिश। यह बात पूर्णतया न्याय संगत भी है। यदि न्यायप्रिय अल्लाह न्याय के दिन, किसी शहीद की अपने सत्तर पापी, अपराधी एवं अन्यायी रिश्तेदारों के लिए सिफ़ारिश को मान लेगा तो इससे अन्याय और पापाचार को और बढ़ावा मिलेगा और न्याय का गला घुटेगा। साथ ही अल्लाह की महिमा को भी दाग़ लगेगा।

हालाँकि कुरान में ऐसे संकेत मिलते हैं कि अल्लाह चाहे तो, किसी को भी, अन्यों के विषय में, सिफ़ारिश करने का अधिकार दे सकता है। जैसे–

(प) *"उस दिन सिफ़ारिश काम न आएगी। यह बात और है कि किसी के लिए 'रहमान' अनुज्ञा दे और उसके लिए बात करने को पसंद करे।"* **(20 : 109)**

(पप) *"उसके यहाँ कोई सिफ़ारिश काम नहीं आएगी, किन्तु उसी की जिसे उसने (सिफ़ारिश करने की) अनुमति दी हो।"* **(34 : 23** तथा **10 : 3 ; 19 : 87 ; 53 : 26** आदि।**)**

8.4 क्या पैगम्बर मुहम्मद को सिफ़ारिश करने का अधिकार था?

कुरान और हदीसों में एक भी ऐसा प्रमाण नहीं मिलता है जिसमें अल्लाह ने किसी व्यक्ति, शहीद, फरिश्ते या पैगम्बर को सिफ़ारिश करने का अधिकार दिया हो। यहाँ तक कि दयालु अल्लाह ने पैगम्बर मुहम्मद को भी किसी की सिफ़ारिश करने का अधिकार नहीं दिया है।

(प) पैगम्बर मुहम्मद स्वंय कहते हैं कि *"मेरा कोई अधिकार नहीं है।"* मैं तो अल्लाह की आज्ञा का पालन करता हूँ : कहो : मैं अपने लिए न तो लाभ का अधिकार रखता हूँ और न हानि, बल्कि अल्लाह ही की इच्छा क्रियान्वित है। यदि मुझे परोक्ष (ग़ैब) का ज्ञान होता तो बहुत-सी भलाई समेट लेता और मुझे कभी हानि न पहुँचती।" **(7 : 188)**

(पप) हदीस मुस्लिम में पैगम्बर साहब स्वंय कहते हैं कि– *"मैं (मुहम्मद) ने (अल्लाह से) अपनी माँ के लिए दया करने की आज्ञा माँगी। परंतु अल्लाह ने उसे अस्वीकार कर दिया।"* **(मुस्लिम, खंड. 2 : 2129 ; पृ. 557)**

(* पपप*) अल्लाह के दूत ने कहा–*"ओ कुरेश लोगो ! तुम अल्लाह से स्वंय माँगो। मैं तुम्हें अल्लाह के विरूद्ध कुछ प्राप्त नहीं करा सकता। ओ अव्द अल मुतालिब के पुत्रो ! मैं अल्लाह की मर्जी के विरूद्ध तुम्हें कुछ भी प्राप्त नहीं करा सकता। ओ साहिया (पैगम्बर की चाची) ! मैं अल्लाह की मर्जी के विरूद्ध तुम्हें कुछ नहीं दिला सकता। ओ फातिमा ! (मुहम्मद की बेटी) जो चाहो, मुझसे माँग लो। लेकिन मैं अल्लाह की मर्जी के विरूद्ध तुमको कुछ नहीं दिला सकता।"* **(मुस्लिम, खंड. 1 : 402 ; पृ. 165)**

इसके विपरीत कुछ हदीसों में 'न्याय के दिन' पैगम्बर मुहम्मद द्वारा सिफ़ारिश करने के संकेत भी मिलते हैं जैसे–**(मुस्लिम, खंड. 4 : 5655 ; पृ. 1478 ; खंड. 1 : 389 ; पृ. 162 ; खंड. 1 : 422 ; पृ. 169–170)**। मगर हदीसों के ये कथन कुरान की मान्यताओं के विरूद्ध होने के कारण अमान्य हैं।

पैगम्बर मुहम्मद स्वंय अपने लिए, पीड़ाओं से बचने के लिए अल्लाह से प्रार्थना करते हैं–"अबू हुरेरा ने बताया कि पैगम्बर मुहम्मद अल्लाह से प्रार्थना करते थे–*"ओ अल्लाह ! मैं आपसे कबर की यातनाओं और जहन्नम की आग तथा जन्ममरण और अल-मसीह और अल-दजाल की दुखदायी पीड़ाओं से बचने के लिए आपकी शरण चाहता हूँ।"* **(बुरवारी, खंड. 2 : 459 ; पृ. 258–259)**

इसके अलावा एक हदीस में पैगम्बर मुहम्मद स्वंय अल्लाह से अपने लिए जन्नत की प्रार्थना करता है–"आयशा ने बतलाया कि जीवन की अंतिम सांस लेते वक्त पैगम्बर मेरे सीने के पास थे, उसने झुककर सुना कि वे कह रहे थे–ओ अल्लाह ! मुझे क्षमा कर मुझ पर दया दिखाओ, मुझे (जन्नत में) साथियों से मिलाओ।" **(मुस्लिम, खंड. 4 : 5986 ; पृ. 1564)**

इन हदीसों पर प्रतिक्रिया करते हुए इस्लाम के विद्वान अनवर शेख लिखते हैं–*"इससे सुस्पष्ट है कि जिस व्यक्ति को स्वंय दया कि जरूरत है वह उसकी याचना करता हो, वह भला दूसरों की सिफ़ारिश करने की स्थिति में कैसे हो सकता है ?"* **(इस्लामिक जिहाद, पृ. 72)**

साथ ही यह नहीं भूलना चाहिए कि पैगम्बर मुहम्मद भी एक मनुष्य थे और मरणशील थे। वे भी मनुष्य की तरह जिए और मनुष्य की भाँति मरे और एक साधारण मनुष्य की तरह अपनी कबर में दफनाये गए। कुरान कहता है–"*तुम्हें भी मरना है और उन्हें भी मरना है। फिर भी निश्चय ही तुम सब क़ियामत के दिन अपने रब के समक्ष झगड़ोगे।* **(39 : 29–31)**। इससे स्पष्ट है कि पैगम्बर मुहम्मद को भी कोई विशेषाधिकार नहीं था। अत: वे भी किसी अन्य के लिए कोई सिफ़ारिश नहीं कर सकते थे।

उपरोक्त विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि (1) न्याय के दिन केवल अल्लाह ही सबका कर्मानुसार न्याय करेगा। (2) इस न्याय व्यवस्था में किसी मुल्ला, मौलवी, व्यक्ति, शहीद, फरिश्ते, पैगम्बर आदि को मध्यस्थता करने का अधिकार नहीं है। (3) अल्लाह चाहे तो किसी को मध्यस्थता करने का अधिकार दे सकता है। मगर उसने यह अधिकार किसी अन्य को नहीं दिया है। पैगम्बर मुहम्मद को भी नहीं। अत: कुरान एवं हदीसों के अनुसार कोई भी शहीद अपने संबंधियों के लिए किसी प्रकार की कोई सिफ़ारिश नहीं कर सकता है और न वह मानी जाएगी। इसलिए किसी शहीद की सिफ़ारिश पर उसके किसी संबंधी या व्यक्ति को जन्नत नहीं मिल सकेगी। काश ! आज के मुस्लिम युवक-युवतियाँ

कुरान के इस निष्कर्ष को समझ सकें और अपने अमूल्य जीवन को शहादत के नाम पर बर्बाद होने से बचा सकें।

8.5 क्या किसी शहीद को जन्नत फौरन मिल सकती है ?

निस्संदेह मुल्ला, मौलवी और कट्टरपंथी इस्लामिस्ट मुस्लिम युवक-युवतियों को यह कहकर बार-बार लुभाते हैं कि यदि तुम गैर-मुसलमानों से 'जिहाद' (युद्ध) करते हुए मारे भी गए तो दयालु अल्लाह तुम्हें फौरन जन्नत में दाखिल कर देगा। तुम्हें क़ियामत तक कबर में नहीं रहना पड़ेगा।

अत: यहाँ विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या इस्लामी धर्म ग्रंथ उपरोक्त कथन की पुष्टि करते हैं या यह कोरा झूठा प्रचार उन्हें लुभाने या बहकाने मात्र के लिए ही है ? क्या इसमें कुछ सच्चाई भी है ? क्या कुरान और हदीसें वास्तव में फौरन जन्नत दिलाने का समर्थन करते हैं ?

कुरान इस विषय में मौन है। लेकिन इतना मात्र कहता है–

(i) *"जो लोग अल्लाह के मार्ग में मरे उन्हें मुर्दा न कहो बल्कि वे जीवित हैं, परंतु तुम्हें (इसका) एहसास नहीं होता।"* **(2 : 154)**

(ii) *"तुम उन लोगों को जो अल्लाह के मार्ग में मारे गए हैं, मुर्दा न समझो, बल्कि अपने रब के पास जीवित हैं, रोज़ी पा रहे हैं।"* **(3 : 169)**

8.6 शहीद की आत्मा चिड़ियों के शरीर में

उपरोक्त प्रश्नों की दृष्टि से कुरान की इन आयतों का अर्थ स्पष्ट नहीं है। परंतु हदीसों में, लोगों के उपरोक्त आयत **(3 : 169)** के बारे में पूछने पर पैगम्बर मुहम्मद ने कहा कि शहीदों की आत्माएँ हरे रंग की चिड़ियों के शरीर में रहती हैं जिनके घौंसलें अल्लाह के सिंहासन से लटकने वाले पिंजड़ों में हैं। वे जहाँ से भी चाहें जन्नत के फलों को खाती हैं और फिर वापिस इन पिंजड़ो में आ जाती हैं। एक बार उनके स्वामी (अल्लाह) ने उनसे पूछा, क्या तुम्हें किसी चीज की जरूरत है ?......तब अल्लाह ने यही सवाल उनसे तीन बार पूछा। तब उन्होंने उत्तर दिया ओ मालिक ! हम चाहते हैं कि आप हमारी आत्माओं को वापिस हमारे शरीरों में लौटा दो ताकि हम एक बार फिर आपके मार्ग में मारे जाएँ।"

(मुस्लिम, खंड. 3 : 465 ; पृ. 1261 ; मिश्कत, खंड. 2 : 18, 61)

हदीस मुस्लिम के भाष्यकार ने नोट संख्या **2345** द्वारा इस विषय को सुस्पष्ट करते हुए लिखा कि "चिड़ियों के शरीर में आत्मा का विचार 'यहूदी एन्साइक्लोपीडिया' में इस प्रकार दिया गया है–*"सत्कर्मियों की आत्माएँ फरिश्तों की सुरक्षा में, पिंजड़ों में चिड़ियों की तरह रहती हैं। शहीदों की आत्माओं के लिए स्वर्ग में एक विशेष स्थान है।"* **(खंड. 6, पृ. 566)**

इस विषय की समीक्षा करते हुए सर्ज ट्रिफ्कोविक ने अपनी पुस्तक 'दी सोर्ड ऑफ दी प्रोफेट' **(पृ. 70)** में लिखा–"कुरान और हदीसों में जन्नत, हूरों, सिल्क के कपड़े पहने हुए युवक, जिन्न और मौत का फरिश्ता संबंधी विचार सीधे-सीधे जोरास्ट्रियनों की पुरानी पुस्तकों से लिए गए हैं। परसियनों ने भी यह कथा गढ़ी है कि न्याय के दिन (क़ियामत) सभी लोगों को एक पुल पार करना होगा जिस पर से गैर-ईमानवाले लड़खड़ाएँगे और गिर जाएँगे।"

यदि कुरान (3 : 109) की उपरोक्त व्याख्या को थोड़ी देर के लिए मान भी लिया जाए कि शहीद की आत्मा सीधे जन्नत को जाती है यानी चिड़ियों का रूप ले लेती है तो कुरान की उन आयतों का क्या अर्थ होगा जिनके अनुसार जन्नत वाले अनेको कुँवारी स्त्रियों के साथ शादी रचाएँगे तथा उनके साथ सामान्य पुरुषों की भाँति अनन्त काल तक विषय-भोग करेंगे। वहाँ उनकी पत्नियाँ भी पहुँच जाएँगी जो अपने पति के साथ सोने-चाँदी के महलों में रहेंगी और तीन-सौ प्रकार के शाकाहारी और गैर-शाकाहारी भोजनों के साथ स्वादिष्ट शराब पिएँगी। क्या कोई चिड़िया मनुष्यों के समान हूरों के साथ रति क्रिया कर सकती है? क्या वे चिड़ियाँ सजे-धजे किशारों का आनंद ले सकेंगीं ? क्या चिड़ियाँ बाजार जाकर अपनी मनपसंद लड़की के साथ शारीरिक संबंध स्थापित कर सकती हैं ? इन जैसे अनेकों प्रश्नों का उत्तर तो वे मुल्ला-मौलवी ही दे सकते हैं जो कि भोले-भोले धर्म प्रेमी युवकों को अनेक हूरों के साथ विषय भोगों के प्रलोभन देकर शहादत के फौरन बाद जन्नत में पहुँचने का आश्वासन देते हैं। मगर ये खोखले प्रलोभन गैर-मुसलमानों के विरूद्ध जिहाद करने के अलावा कुछ और भी हैं क्या ?

8.7 शहीद को जन्नत केवल क़ियामतबाद

अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने वाला शहीद जन्नत में कब पहुँचेगा, इसका उत्तर कुरान में तो नहीं, परंतु हदीसों में सुस्पष्ट किया गया है। देखिए प्रमाण–

(प) *"इब्न उमर ने बतलाया कि अल्लाह के पैगम्बर ने कहा–"जब कोई व्यक्ति मरता है तो (प्रतिदिन) उसको प्रातःकाल और सांयकाल उसकी सीट दिखलाई जाती है। यदि वह जन्नत जाने वालों में से होता है तो उसको जन्नत में सीट दिखलाई जाती है। और यदि वह दोज़ख की आग में जाने वालों में से है तो उसे दोज़ख में उसकी सीट दिखलाई जाती है। तब उससे यह कहा जाता है–तुम्हारी वह सीट है जहाँ, तुम 'क़ियामत' के दिन भेजे जाओगे।"* **(मुस्लिम, खंड. 4 : 6858 ; पृ. 1795)**

(पप) *"सुलेमान ब. यासर ने पैगम्बर को यह कहते हुए सुना कि–क़ियामत के दिन सबसे पहला व्यक्ति (जिसके कर्मो का फैसला) सबसे पहले किया जाएगा वह होगा जो कि एक शहीद की भाँति मरा।"* **(मुस्लिम, खंड. 3 : 4688 ; पृ. 1270)**

(पपप) अबू हुरेरा ने बतलाया कि पैगम्बर मुहम्मद ने कहा–*"निस्संदेह 'कियामत के दिन' न्याय के लिए वह व्यक्ति सबसे पहले लाया जाएगा जो कि शहीद के रूप में (सुविख्यात) रहा, वह बुलाया जाएगा, उसको, उस पर किए गए उपकारों को याद दिलाया जाएगा जिन्हें वह स्वीकारेगा। तब अल्लाह उससे पूछेगा कि 'तुमने तब क्या किया ?' वह जवाब देगा : मैं आपके लिए लड़ा तब तक कि मैं शहीद हुआ।"* **(मिश्कत, खंड. 1 : 114 ; पृ. 411)**

(पअ) अल्लाह के देवदूत ने कहा–*"जन्नत में सबसे पहला जत्था 'क़ियामत के दिन' पहुँचेगा, जिनके चेहरों की चमक पूर्णमासी के देदीप्यमान चंद्रमा के समान होगी और दूसरे जत्थे की चमक उससे कम और आसमान में चमकने वाले सितारों के समान होगी।"* **(मिश्कत, खंड. 4 : 23 ; पृ. 167)**

(अ) *"कबरों में फरिश्तें 'जन्नत' और 'जहन्नम' के दर्शन कराते हैं।"* **(माजाह, खंड. 5 : 4262; अबुल कासिम, पृ. 222)**

उपरोक्त प्रामाणिक हदीसों के कथनों से सुस्पष्ट है कि (1) शहीद सहित, सभी मुसलमानों के कर्मो का फैसला क़ियामत के दिन होगा, उससे पहले नहीं, (2) कबरों में पड़े, जन्नत और दोज़ख, दोनों जगह जाने वालों की आत्माओं को रोजाना प्रातः और सांयकाल उनके स्थान केवल दिखलाए जाते हैं। वे उन्हें दिए नहीं जाते हैं। (3) 'क़ियामत के दिन' अल्लाह के सामने पेश होने वाला सबसे पहला जत्था शहीदों का होगा और तभी उनके कर्मो का फैसला होगा। अतः अल्लाह अपने सौदे के वायदे के अनुसार जिहाद करने वाले किसी मुसलमान शहीद को जन्नत देने का फैसला केवल क़ियामत के ही दिन करेगा, उससे पहले नहीं। जो मुल्ला-मौलवी युवकों को फौरन जन्नत का प्रलोभन देते हैं, वे सरासर झूठे हैं।

इतना ही नहीं, हदीसों में पैगम्बर मुहम्मद खुद कहते हैं कि हालाँकि सबसे पहले वे स्वंय भी क़ियामत के दिन ही जन्नत के द्वार पर पहुँचेंगे। इसके बाद ही अन्य कोई मुसलमान, शहीद आदि प्रवेश कर सकेगा। इससे पहले कोई नहीं। देखिए कुछ प्रमाण–

(प) *" पैगम्बर ने कहा–क़ियामत के दिन परमेश्वर के देवदूतों में से मेरे अनुयायियों की संख्या सबसे अधिक होगी और मैं ही जन्नत का दरवाजा खटखटाने वाला सबसे पहला व्यक्ति हूँगा।"* **(मुस्लिम, खंड. 2 : 382 ; पृ. 161)**

(पप) अल्लाह के देवदूत ने कहा–*"क़ियामत के दिन मैं जन्नत के दरवाजे पर पहुँचूगा और उसके खोलने की प्रार्थना करूँगा और तब उसका द्वारपाल कहेगा–आप कौन हैं ? मैं कहूँगा–मुहम्मद। तब वह कहेगा कि आपके लिए ही मुझे दरवाजा खोलने के लिए आदेश दिया गया है तथा आपसे पहले किसी अन्य को इसे न खोलने के लिए कहा गया है।"* **(मुस्लिम, खंड 1 : 384 ; पृ. 161)**

अतः शहीद तो क्या, स्वंय पैगम्बर मुहम्मद भी क़ियामत के दिन तक कबर में दबे पड़े रहेंगे। किसी शहीद का फौरन जन्नत में दाखिल होना असंभव है तथा यह मुल्लाओं के झूठे प्रलोभन के अलावा कुछ नहीं है।

9. जन्नत और क़ियामत

9.1 क़ियामत कब आएगी ?

अब निश्चित हो गया कि एक जिहादी को जन्नत केवल कियामत के वाद ही मिलेगी तो अब प्रश्न उठता है कि क़ियामत कब आएगी ? तत्कालीन अरबवासियों ने मुहम्मद से पूछा कि क़ियामत कब आएगी ? इस विषय में कुरान कहता है–*"तुमसे उस घड़ी (क़ियामत) के विषय में पूछते हैं कि वह कब आएगी ? कह दो–इसका ज्ञान मेरे रब ही के पास है। अतः वह उसे उसके समय पर प्रगट करेगा। वह आकाशों और धरती में बोझिल हो गई है–बस अचानक ही वह तुम पर आएगी।"* **(7 : 187)**

अतः पैगम्बर मुहम्मद को भी क़ियामत की घड़ी का सही समय मालूम नहीं था।

प्रतीत होता है कि इस्लाम की अन्य मान्यताओं के समान, क़ियामत के समय की अज्ञानता का विचार भी बाइबिल से लिया गया है, जहाँ ज़ीजस को भी *'न्याय के दिन'* का पता नहीं था। बाइबिल कहती है–*"न्याय की उस घड़ी को कोई नहीं जानता, स्वर्ग में रहने वाले फरिश्ते भी नहीं, ईश्वर पुत्र (जीज़स) भी नहीं जानता सिवाय फादर (परमेश्वर) के।"* **(मार्क 13 : 32–33)**

कुरान के रचने वाले अल्लाह ने भले ही क़ियामत की निश्चित तारीख नहीं बताई परंतु उसने अरबवासियों को उन स्थितियों एवं लक्षणों को अवश्य बता दिया जो क़ियामत के दिन होंगे।

9.2 क़ियामत क्या है ?

इस्लाम में क़ियामत एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा है। कुरान में यह शब्द चौंसठ बार आया है तथा इसके लिए पचहत्तर पर्यायवाची शब्द प्रयोग किए गए हैं। यह दो अर्थों में आता है–पहला क़ियामत का दिन यानी अल्लाह द्वारा मुसलमानों के कर्मों का न्याय करने का दिन। दूसरा क़ियामत के दिन सृष्टि की भौतिक स्थिति। "*क़ियामत का दिन अवश्य आएगा।*" **(42 : 47)**। "*वह न्याय का दिन है जिस दिन सूर बजेगा।*" **(20 : 102 ; 6 : 73)**। *"लोग अपनी-अपनी कबरों से नंगे ही निकलकर अल्लाह के सामने पेश होंगे।"* **(16 : 36)** "पैगम्बर मुहम्मद ने आयशा को कहा–*"क़ियामत के दिन लोग नंगे बदन, नंगे पाँव और बिना खतना किए एक गए स्थान पर जमा किए जाएँगे। आयशा ने पूछा क्या वहाँ स्त्रियाँ और पुरुष भी नंगे और एक दूसरे की ओर देखेंगे ? तब पैगम्बर ने जवाब दिया कि उनका तब एक दूसरे की ओर देखना तो गंभीर मामला होगा।"* **(मुस्लिम, खंड. 4 : 6844 पृ. 1791)** *"मनुष्य जीवन में जो कुछ करता है अल्लाह के फरिश्ते उसे लिखते जाते हैं, वही क़ियामत के दिन उसके सामने पेश होगा।"* **(42 : 28–29)**। *"हर मनुष्य का फरिश्ता उसके कर्म पत्र पेश करेगा।"* **(50 : 23)** *"अल्लाह मनुष्यों के कर्मों का फैसला करेगा।"* **(7 : 7–9)**। *"आदमी मरने के बाद से लेकर क़ियामत तक इच्छा के बावजूद वापिस नहीं आ सकता।"* **(23 : 100)**। ऐसी स्थिति में कोई शहीद अपने कर्म पत्रों को अल्लाह के सामने पेश किए बगैर जन्नत में भला कैसे जा सकता है ?

9.3 क़ियामत के दिन के लक्षण

कुरान के अनुसार यह अचानक आएगी और सारी दुनिया तहस नहस हो जाएगी। जैसे–

(i) *"क़ियामत के दिन पहाड़ हट जाएँगें।"* **(18 : 17–18)** *"धरती फट जाएगी।"* **(50 : 44)** *"आसमान काँपने लगेगा, पहाड़ धुनी हुई ऊन की तरह उड़ने लगेंगे।"* **(52 : 9 : 10)** *"आसमान फटकर गुलाबी हो जाएगा।"* **(55 : 37)**

(ii) "*जमीन भूचाल से काँपने लगेगी। पहाड़ चूरा-चूरा हो जाएँगे। फिर वे गुबार बनकर उड़ने लगेंगे।"* **(56 : 1–6)** *"जब सूर फूँका जाएगा तो सब टूट-टूटकर बराबर हो जाएगा।"* **(69 : 13–18)** *"आसमान पिघले हुए ताँबे की तरह हो जाएँगे।"* **(70 : 6–9)** *"आँखें चुँधिया जाएँगी। चाँद को ग्रहण लग जाएगा, सूर्य और चंद्रमा मिल जाएँगे।"* **(75 : 7–9)**

(iii) "*भूचाल पर भूचाल आएँगे।"* **(79 : 6–9)**। *"जब सूर्य को लपेट दिया जाएगा। तारे प्रकाशहीन हो जाएँगे। पहाड़ चलाए जाएँगे, समुद्र उबल पड़ेगें।"* **(81 : 1–6)** *आसमान फट जाएगा।"* **(84 : 1)**

कुरान के हिन्दी भाष्यकार मुहम्मद फारुक खाँ और डा. अहमद क़ियामत की परिभाषा करते हुए लिखते है–*"क़ियामत–पुनरुत्थान, महाप्रलय। एक ऐसे दिन से अभिप्रेत है जब वर्तमान लोक की व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाएगी। सारे अविकारी मर जाएँगे। इसके पश्चात् अल्लाह एक दूसरी सृष्टि की रचना करेगा। सारे लोग पुनः जीवित करके उठाए जाएंगे और उन्हें उनके कर्मो का बदला दिया जाएगा। यही दिन क़ियामत का होगा।"* **(पृ. 602)**

क़ियामत की उपरोक्त परिभाषा के अनुसार प्रत्येक मुसलमान के अच्छे और बुरे कर्मो का फैसला क़ियामत के दिन के बाद होगा। जब अच्छे कर्म करने वालों को 'जन्नत' और बुरे कर्म करने वालों को

'जहन्नम' की आग में फैंका जाएगा। अतः अच्छे कर्म करने वाले शहीद को भी जिहाद के बदले 'जन्नत' दूसरी सृष्टि में क़ियामत के बाद ही मिलेगा। शहीद होते ही फौरन जन्नत नहीं मिलेगी।

संक्षेप में सार यह है कि क़ियामत के दिन समस्त सृष्टि का विनाश हो जाएगा। मानव जाति का पूर्ण संहार ही नहीं बल्कि प्रकृति भी पूरी तरह तहस-नहस हो जाएगी। अतः कुरान विभिन्न स्थितियों की तो बात करती है तथा लोगों को बेहद डराती है, परंतु वह स्थिति कितने दिनों, महीनों एवं वर्षों बाद निश्चित रूप से किस दिन आएगी, उसके बारे में कुछ नहीं कहती। क़ियामत बस यकायक आएगी, इतनी भर कहती है। वैज्ञानिकों के अनुसार यह स्थिति चार अरब वर्ष बाद आएगी।

जो दयालु अल्लाह पैगम्बर मुहम्मद की सभी पारिवारिक समस्याओं, पत्नियों की कलह आदि का इलहाम द्वारा तत्काल समाधान दे सकता है तो वह सर्वज्ञ अल्लाह क़ियामत के समय को क्यों नहीं बता सकता ? इसका यही अर्थ हुआ कि सर्वज्ञ अल्लाह भी क़ियामत का सही समय नहीं जानता है। क़ियामत की जो स्थितियाँ कुरान में बतलाई गई हैं वे शायद लाखों, करोड़ों वर्षों बाद आएँ या न भी आएँ कोई नहीं जानता। ऐसा प्रतीत होता है कि अल्लाह और पैगम्बर मुहम्मद ने क़ियामत के अनिश्चित दिन जन्नत देने का प्रलोभन इसीलिए दिया ताकि 'ईमान वाले' गैर-मुसलमानों को इस्लाम स्वीकार कराने के लिए लंबे समय तक लगातर जिहाद करते रहें। परंतु उपरोक्त प्रमाणों से इतना स्पष्ट है कि **किसी भी फिदायीन एवं शहीद को मरते ही किसी हालात में भी फौरन जन्नत नहीं मिलेगा। उसे भी सामान्य मुसलमान की तरह क़ियामत** के दिन तक एक कबर में प्रतीक्षा करनी पड़ेगी और न वह अपने किसी रिश्तेदार की जन्नत आदि के लिए सिफारिश ही कर सकेगा।

जैसे क़ियामत का दिन अनिश्चित है, वैसे ही शहीद का जन्नत में फौरन प्रवेश भी अनिश्चित है। जैसे क़ियामत एक काल्पनिक दिन है, उसी तरह जन्नत भी एक सपना है, एक मृग मरीचिका है। यदि इसे जिहाद के लिए प्रलोभन मात्र कहें तो सर्वथा उचित होगा। अतः किसी मुसलमान एवं शहीद को जन्नत क़ियामत के बाद ही मिलेगा, जो कि अनिश्चित है।

10. मुख्य सारांश

कुरान और हदीसों के उपरोक्त कथनों से सुस्पष्ट है कि इस्लामी जन्नत कामवासनाओं, लालसाओं और सांसारिक लालचों से भरा पड़ा है जिन्हें स्वंय पैगम्बर मुहम्मद ने अरब के बदायूनों को लुभाने तथा निरपराध पैगनों, जिन्होंने अल्लाह के धर्म को मानने से इंकार किया था, को लूटने, हत्या करने एवं भयभीत करने के लिए प्रचारित किया था। पैगम्बर मुहम्मद ने अनुभव किया कि अपने अरब साम्राज्य के वांछित उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसे अशिक्षित, अत्यन्त गरीब और घुमन्तु बदायूनों को, लुभाने एवं संगठित कर अपने शत्रु पैगनों और यहूदियों से लड़ने के लिए उकसाने की अत्यन्त जरूरत है। वह भलीभाँति जानता था कि अरबों के लिए कौन-कौन से पदार्थ आकर्षक हो सकते थे। वह यह भी जानता था कि अरब लोग अत्यन्त कामातुर और शराब के शौकीन हैं।

इसके अलावा अरब के रेगिस्तान में पानी और हरियाली का अत्यन्त अभाव है जिनके लिए सभी लालायित रहते थे। उसने बदायूनों को लुभाने के लिए जन्नत का अत्यन्त मनमोहक भोगविलासपूर्ण वर्णन किया। वहाँ उनके लिए अनन्त काल तक विषय भोग के लिए असीम सुंदरी युवा कुँवारी गोरी बड़ी-बड़ी काली आँखों वाली हूरों का जो वर्णन किया उसने उन्हें मुग्ध कर दिया। वहाँ के स्वादिष्ट

भोजन, शराब और वैभवपूर्ण जीवन के वर्णनों ने उनके दिल और दिमाग को आकर्षित किया। इनमें सबसे अधिक लुभाने वाली लड़ाई में विजित लोगों की दो चीजें थीं–लूट का माल और अनेकों हूरियों के साथ सदैव विषय भोग जो कि वे इस जीवन में कभी कल्पना भी नहीं कर सकते थे। परिणामस्वरूप वे निर्भीक लड़ाकू होकर और जल्दी से जल्दी लड़कर मरने के बाद जन्नत के सुखों को भोगने के लिए लालायित हो गए। ये प्रलोभन ही मुख्य कारण थे जिनके फलस्वरूप प्रारंभिक काल में मुहम्मद को पैगनों पर जीत पर जीत मिलती गई।

इसके अतिरिक्त जहन्नम के भयानक अग्निपूर्ण वर्णनों ने भी बदायूनों को इससे बचने के लिए मुहम्मद का आज्ञाकारी बना दिया। निस्संदेह जहन्नम की आग का भय और जन्नत को हूरियों के आकर्षण ने अरबी बदायूनों को मुहम्मद के विश्व साम्राज्य के उद्देश्य में महान सहायक बनाया। आज भी दोज़ख की आग का भय और जन्नत के मरणोपरान्त भी यौन–सुख एवं वासनामय जीवन के प्रलोभन लाखों मुसलमानों को आकर्षित कर रहे हैं, भले ही वास्तव में वे कभी पूरे न हों।

इस्लामी जन्नत एक कल्पना मात्र है। आज विज्ञान ने बह्मण्ड का जो ज्ञान विश्व को दिया है, उसमें जन्नत जैसा कोई स्थान नहीं है, जो सोने–चाँदी और हीरे–मोतियों का बना हो, जिसमें नदियाँ एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ तथा बाग–बगीचें आदि हों। यह इस्लाम की कल्पना मात्र है जिसकी वैज्ञानिक पुष्टि असंभव है।

हदीसों के उपरोक्त अनेकों प्रमाणों से सुस्पष्ट हो गया है कि किसी भी शहीद या फिदायीन को क़ियामत के दिन से पहले जन्नत नहीं मिलेगा और क़ियामत कब आएगी कोई नहीं जानता। जब क़ियामत का दिन ही अनिश्चित व काल्पनिक है तो जन्नत मिलना भी अनिश्चित व काल्पनिक है।

इसलिए विद्वानों का कर्त्तव्य है कि वे इस झूठ का फर्दाफाश करें कि किसी शहीद को जन्नत फौरन मिलेगा। इससे न केवल हजारों युवक–युवतियों के प्राणों की रक्षा होगी बल्कि इस्लाम की सच्चाई भी स्थापित होगी।

इसीलिए दार्शनिक ई. रैनान का यह कहना सर्वथा उचित प्रतीत होता है कि–

"मुसलमान इसके (फौरन जन्नत मिलने के भ्रम के) सबसे पहले शिकार हैं। अनेकों बार मैंने अपनी पूर्वी देशों की यात्राओं में देखा है कि (धार्मिक) कट्टरपन कुछ थोड़े से खतरनाक लोगों से आता है जो दूसरे लोगों द्वारा धर्म को अपनाने के लिए आतंकवाद का प्रयोग करते हैं। ***मुसलमानों को अपने (कट्टरपन) से मुक्त कराना (उनकी) सबसे उत्तम सेवा है जो कि कोई उनके लिए कर सकता है।"*** **(ह्वाइ आई. एम. नॉट ए मुस्लिम, इबन्न वराक, कवरपेज)**

आज विश्व के अधिकांश देशों में विभिन्न धर्मों, मतों एवं विचारधाराओं के लोग रहते हैं जिनमें पारस्परिक सहयोग एवं सहिष्णुता की आवश्यकता है। वैदिक संस्कृति के मूलमंत्र **'जियो और जीने दो'** की संस्कृति अपनाने का समय है।

वर्तमान विज्ञान ने जन्नत के वर्णनों के खोखलेपन को सबके सामने प्रस्तुत कर दिया है। अतः न केवल गैर-मुसलमानों बल्कि मुसलमान युवकों के बहुमूल्य जीवन को भी जिहाद और फिदायीन हमलों से बचाना विवेकशील मुस्लिमों एवं गैर-मुस्लिम विद्वानों की प्राथमिकता होनी चाहिए।

अनेक मुस्लिम विद्वान भी जन्नत को काल्पनिक मानते हैं। मगर आवश्यकता है कि इस अभियान को और अधिक तेज करके मुस्लिम युवकों को रचनात्मक, प्रगतिशील और मानवोपयोगी दिशा की ओर प्रेरित किया जाए तथा जिहाद के नाम पर उन्हें मरने से बचाया जाए।

यहाँ समझने और समझाने की बात यह है कि जब इस्लामी धर्म ग्रंथ-कुरान और हदीसें एवं स्वंय पैगम्बर मुहम्मद के कथन हमें स्पष्ट बताते हैं कि किसी व्यक्ति, शहीद और फ़िदायीन को फ़ौरन जन्नत नहीं मिलेगा, क़ियामत के दिन पर ही मिलेगा जो कि अनिश्चित है, सृष्टि विनाश (प्रलय) से पहले नहीं है और यही इस्लाम का सच्चा संदेश है तो मुल्ला-मौलवियों का धार्मिक कर्त्तव्य है कि वे धर्मग्रंथों के उपरोक्त सच को मुस्लिम युवक-युवतियों को बताएँ और इन्हें फौरन जन्नत मिलने के झूठे प्रलोभन न दें। उन्हें फिदायीन हमलों द्वारा आत्महत्या और अन्य लोगों की हत्या करने से भी बचाएँ क्योंकि आत्महत्या करने वाला तो 'जहन्नम' में ही जाएगा। इसलिए दयालु अल्लाह, पैगम्बर मुहम्मद एवं धर्मग्रंथों की उपरोक्त आज्ञाओं का पालन करना ही इस्लाम और मानवता की सच्ची सेवा है।

संदर्भ

अनवर शेख (2002) '*इस्लाम-कामवासना और हिंसा*', दी प्रिन्सीपलिटी पब्लिशर्स पो. बो. 918, कार्डिफ, यू. के.

दैनिक जागरण (24.4.2008) नई दिल्ली संस्करण।

मौलाना मुहम्मद फारुक खाँ, डा. मुहम्मद अहमद (2005) *पवित्र कुरआन,* मधुर संदेश संगम, जामिया नगर, नई दिल्ली।

Abu Dawud (2007) *Sunan Abu Dawud* tr. Ahmed Hasan 3 vols. Kitab Bhawan, New Delhi

Anwar Shaikh (1998) *Islamic Jehad* in *Islam and Human Rights,* A. Ghosh, Pub. Houston, USA.

Bayat, Mufti Zubair (2005) *The Maidens of Paradise,* Idara Ishaat Diniyat, New Delhi.

Erfani M. E. (2004) *A–Z Ready Reference of the Quran* Good word Books Delhi.

Fazal E Ammal (1994) *Soukhal Hadith* vol. 1., M. M. Zakarriya, Idara Ishaat Diniyat, Delhi.

Ibn E. Majah (2000) *Sunan Ibn E. Majah* Eng, tr, by Tufail Muhammad Ansari, 5 Vols. Kitab Bhawan, New Delhi.

Imam Bukhari (1987) *Sahih Al. Bukhari* Eng. tr, by Muhammad Muhsin Khan, 9 vols. Kitab Bhawan, New Delhi.

Imam Malik (2003) *Muwatta,* Eng, tr, by Prof. Muhammad Rahimuddin, Kitab Bhawan, New Delhi.
Imam Muslim (2000) *Sahih Muslim,* Eng, tr, by Hamid Siddiqi, 4 vols. Kitab Bhawan, New Delhi.
Imam Tirmizi *Jame Tirmizi*
J**an Sangh Today** (March 2008) Monthly Magazine, New Delhi.
Mishqat ul-Masahib (2001) Eng, tr, by Maulana Fazlul Karim, 4 Vol, Islamic Book Service, New Delhi.
More. S (2004) Islam, Rajhans, pune
Pioneer Daily (18.5.2008) New Delhi Edition
Renan, E. (1995) in *Why I am Not a Muslim,* ed. Ibn Warraq Prometheus Books. NewYork
Trifkovic Serge (2002) *The Sword of the Probhet,* Regina Orthodox Press inc. Boston.

मृत्यु-उपरान्त यौन-सुख
इस्लाम की विशेषता

–अनवर शेख

''यौन-सुख के प्रति मानव की दुर्बलता को विचारकर इस्लाम ने कामवासना की तृप्ति के लिए एक असाधारण सिद्धांत प्रस्तुत किया है जो कि बहुत लुभावना, सुखद एवं क्षुधा तृप्तिदायक है। इसके अनुसार कामोपभोग की ललक मृत्यु के उपरान्त भी समाप्त नहीं होती क्योंकि यदि वह व्यक्ति मुसलमान है तो उसे पुनः जीवित किया जाएगा और उसे जन्नत में स्थान मिलेगा जहाँ पर वह अपनी इच्छानुसार दिन-रात यौन-सुख भोगेगा। वहाँ पर यौन सुख केवल पुरुषों के लिए ही आरक्षित हैं और जन्नत की हूरें (सुन्दरतम कुमारी कन्याएं) अपने पुरुष स्वामियों की पूर्णतया आज्ञाकारिणी हैं। यह विचार इस्लामी यौन मनोविज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि यह नबी के दृष्टिकोण यानी कि "नर की प्रभुत्व की ललक बनाम नारी का कामाकर्षण" से मेल खाता है जिसमें स्त्री अपने आपको पुरुष के समक्ष शारीरिक व मानसिक और कलात्मक लुभावनेपन समेत पूर्णतः समर्पण कर देती है। इस प्रकार नर को सुख पहुँचाना ही नारी का एक मात्र सुख है''–इस्लामः काम वासना और हिंसा, (पृ. 67)

'जन्नत' के लिए 'जिहाद'

"निस्संदेह अल्लाह ने 'ईमान' वालों से उनके प्राणों और उनके मालों को इसके बदले में खरीद लिया है कि उनके लिए 'जन्नत' है : वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं तो वे मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं। यह अल्लाह के जिम्मे ('जन्नत' का) एक पक्का वादा है 'तौरात' और 'इंजील' और 'कुरान' में और अल्लाह से बढ़कर अपने वादे को पूरा करने वाला कौन हो सकता है ?" (9 : 111)

"और यदि तुम अल्लाह के मार्ग में मारे गए या मर गए, तो अल्लाह की क्षमा और दयालुता उन सब चीजों से उत्तम है जिन्हें ये लोग इकठ्ठा करते हैं और यदि तुम मरे या मारे गए, अल्लाह ही के पास इकठ्ठे किए जाओगे।" (3 : 157–158)

"जन्नत के सबसे निचले तल पर के व्यक्ति के पास सात मंजिलें होंगी और वह सातवें तल के नीचे छठे तल पर होगा। उसके पास तीन सौ नौकर भी होंगे जो कि उसके लिए सुबह और शाम तीन सौ खाने की प्लेटें लाएँगे। प्लेटें सोने और चाँदी की बनी होंगी और प्रत्येक प्लेट में एक-दूसरे से भिन्न प्रकार का खाना होगा। वह आखिरी प्लेट के स्वाद का आनंद पहली प्लेट के समान उठाएगा। नौकर उसके लिए तीन सौ ग्लास भी लाएँगे और प्रत्येक गिलास के पेय का प्रकार दूसरे से भिन्न होगा। वह आखिरी गिलास के पेय का आनंद पहले गिलास के समान उठाएगा...जन्नत में हर व्यक्ति की उसकी सांसारिक बीबियों के अलावा हूरों में से बहत्तर बीवियाँ भी होंगी और उनमें से एक की चौड़ाई एक मील की होगी।" (अहमद, अबू याला, बयात, पृ. 36-37)